तमसो मा ज्योतिर्गमय

जागृति

इलाहाबाद विद्या निकेतन, इलाहाबाद

संचालित

अग्रवाल जातीय शिक्षा परिषद्, इलाहाबाद

वार्षिक पत्रिका – 2024

प्रधानाध्यापिका
श्रीमती टिविंकल अग्रवाल

संरक्षक
श्रीमती मंजू सिंह

सम्पादिका
श्रीमती माला सेठ

खड़े में दायें से–श्री सुनील अग्रवाल, श्री अजय कुमार जैन, श्री आशुतोष अग्रवाल, श्रीमती माला सेठ, श्रीमती दीप्ति गोयल, श्रीमती अंजुला अग्रवाल, श्रीमती प्रियंका अग्रवाल, श्री विकास अग्रवाल, श्री पुनीत अग्रवाल एवं श्री संजय गोयल

बैठे में दाये से–श्रीमती ट्विंकल अग्रवाल, श्री राजेश अग्रवाल, श्री राम कृष्ण अग्रवाल, डश्व हरी ओम अग्रवाल, डश्व पीयूष रंजन अग्रवाल, श्री शिव दर्शन लाल अग्रवाल, श्री श्याम सुंदर अग्रवाल, श्री राज कमल अग्रवाल, श्री श्याम मनोहर अग्रवाल एवं श्री ओम प्रकाश अग्रवाल

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलामं् ।

शस्य श्यामलाम् मातरम् ।

वन्दे मातरम् ।

शुभ्र ज्योत्स्नां पुलकित यामिनीम् ।

फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् ।

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम् ।

सुखदाम् वरदाम् मातरम् ।

वन्दे मातरम् ।

:: स्कूल प्रार्थना ::

वह शक्ति हमें दो दयानिधे, कर्त्तवरू मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम, जग जीवन सफल बना जावें।।
हम दीन दुखी निबलों के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके उनको तारें खुद तर जावें।।
छल दंभ द्वेष पाखण्ड झूठ, अन्याय से निशि दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,शुचि प्रेम सुधारस बरसावें।।
निज आन मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस पुण्य भूमि पर जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।।

x x x x x x

तुम्हीं हो माता-पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धू, सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे।।
तुम्हीं हो नैय्या तुम्हीं खेवैया, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो माता-पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।
तुम्हीं हो माता-पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।
जो खिल सके न वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि सही रखना, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।
तुम्हीं हो माता-पिता तुम्ही हो, तुम्हीं हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।।

इलाहाबाद विद्या निकेतन
प्रबंध समिति के सदस्यों के नाम की सूची

1.	डॉ0 पीयूष रंजन अग्रवाल	अध्यक्ष
2.	शिव बर्धन लाल अग्रवाल	उपाध्यक्ष
3.	श्री हरि ओम अग्रवाल	उपाध्यक्ष
4.	श्री गोपाल दास अग्रवाल	उपाध्यक्ष
5.	श्री राम कृष्ण अग्रवाल	सी0ए उपाध्यक्ष
6.	श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल	उपाध्यक्ष
7.	श्री राजीव रंजन अग्रवाल	उपाध्यक्ष
8.	श्री राम कमल अग्रवाल	उपाध्यक्ष
9.	श्री गणेश अग्रवाल	सभी प्रबंधक
10.	श्री विजय कृष्ण अग्रवाल	कोषाध्यक्ष
11.	श्री श्याम मनोहर अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
12.	श्री नरेश कुमार गुप्ता	संयुक्त मंत्री
13.	श्री आशुतोष अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
14.	श्री सुनील अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
15.	श्री विकास अग्रवाल	संयुक्त मंत्री
16.	श्री वीरेन्द्र अग्रवाल	सदस्य
17.	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल	सदस्य
18.	डॉ0 स्मिता अग्रवाल	सदस्य
19.	श्री संजय गोयल	सदस्य
20.	श्री रोशन अग्रवाल	सदस्य
21.	श्री शिवांश अग्रवाल	सदस्य
22.	श्री राकेश अग्रवाल	सदस्य
23.	श्री पुष्कर अग्रवाल	सदस्य
24.	श्री अजय कुमार जैन	सदस्य
25.	श्री पुनीत अग्रवाल	सदस्य

'दृढ़संकल्प से मुश्किल लक्ष्य भी हो सकता है हासिल'

ज्यादातर लोग यह कहते हैं कि 'जैसे विचार वैसा आचार' और जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि, इसलिए अधिकतर यह देखा गया है कि हमारे जीवन में जो भी घटता है या घटने वाला है, पर पूरी तरह से हमारे ही अपने संकल्प या यूँ कहें कि हमारी सोच पर निर्भर करता है। वैसे तो इस सृष्टि पर रहने वाला हर मनुष्य हर समय कुछ न कुछ सोचता ही रहता है क्योंकि हमारा दिमाग चौबिस घंटे चलता रहता है, फिर चाहे हम जाग्रत अवस्था में हों या निन्द्रावस्था में। मनोचिकित्सकों के अनुसार नींद में जाने से ठीक पहले किए गए विचार ही सपनों का रूप लेंते हैं। जिस प्रकार रेडियो या टीवी पर अपना मनपसंद कार्यक्रम सुनने व देखने के लिए फिक्वेन्सी सेट करनी पड़ती है, उसी प्रकार से हम भी अपना जीवन जिस प्रकार बनाना चाहते हैं, उसके लिए हमें अपने विचारों की सही फ्रिक्वेन्सी दृढ़तापूर्वक सेट करनी होगी। अगर हम दूसरों की कमजोरी का चिंतन करते रहेंगे तो एक दिन वह कमजोरी हमारे जीवन का अंग बन जायेगी।

अगर हम अपने मन में दुःख के विचार उत्पन्न करते रहेंगे तो हमारे पास दुःख आते रहेंगें। और हम दुःखी हो जायेंगे, लेकिन जब हमारे मन में खुशी के विचार होंगे तो पूरे ब्रहमाण्ड से खुशी की तरंगे हमारी ओर आकर्षित होंगीं। इसलिए जरूरत है केवल अपने चिंतन की धारा को बदलने की, ताकि सभी प्रकार की चिताए मिट जाए। मनुष्य अगर चाहे तो अपनी प्रबल इच्छा शक्ति एवं दृढ़संकल्प शक्ति के आचार से मुश्किल से मुश्किल लक्ष्य को हासिल कर सकता है। अतः हमें यह वाक्य अच्छी तरह से अपने मन मस्तिष्क में बिठा लेना चाहिए कि हम चाहे तो 'सब कुछ संभव हो सकता है।'

डॉ0 पीयूष रंजन अग्रवाल
अध्यक्ष

सफलता

जीवन में आपकी सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप क्या करते हैं या क्या पाते हैं। यह इस बात पर निर्भर करती है कि आप कैसे इंसान बनते हैं। अरस्तू ने लिखा था 'चारित्रिक विकास ही जीवन का अन्तिम ध्येय है। यह तभी सम्भव है, जब आपके अन्दर आत्म-अनुशासन है। प्लेटों ने भी कहा था- 'स्वंय को जीतना प्रथम और सर्वश्रेष्ठ विजय है। यदि मन से भी हार गये; फिर काहे की जीत।

सफलता सिर्फ तभी सम्भव है, जब आप शार्टकट या आसान रास्ता चुनने की अपनी स्वभाविक प्रवृत्ति से उबर जाएं। स्थायी सफलता सिर्फ तभी सम्भव है, जब आप लम्बे समय तक कड़ी मेहनत करने के लिए खुद को अनुशासित कर लें, क्योंकि आत्म-अनुशासन के बगैर कड़ी मेहनत दिशाविहीन होती है। यदि हम किसी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमको सबसे पहले तो यह पता लगाना चाहिए कि उस क्षेत्र में सफलता कैसे प्राप्त की जाती है। फिर उन योग्यताओं और गतिविधियों का बार-बार तब तक अभ्यास करना चाहिए, जब तक कि हमें वही परिणाम न मिल जाय जो हम चाहते हैं।

सफलता प्राप्त करने के लिए हमें सफल लोगों का अनुसरण भी करना चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमारे लिए सफलता प्राप्त करना कठिन हो जाता है। जैसा बोओगे वैसा काटोगे का नियम कारण व कार्य के नियम का ही रूपांतर है। इसके अनुसार इंसान जो बोता है वहीं काटता है। इसलिए हमें चाहिए कि हम सफलता की ओर ले जाने वाले अपने कार्यो की संख्या बढ़ा लें और निरर्थक कामों को छोड़ दें।

सफलता की एक लोक प्रिय परिभाषा है- 'अपने मनचाहे तरीके से जीवन जीने की योग्यताः अपने चुने हुए लोगों के साथ और अपनी मनचाही परिस्थितियों में केवल वही चीजे करना जो आपको खुशी देती हो। जब आप हर क्षेत्र में सफलता की अपनी परिभाषा तय कर लेते हैं, तो आपको तत्काल दिख जायेगा कि अपने जीवन के आदर्श बनाने के लिए कौन सी चीजें कम या ज्यादा करनी चाहिए। आमतौर पर आपको अपने सपनों की दिशा में आगे बढ़ने से रोकने वाली सबसे बड़ी चीज होती है - आत्म अनुशासन का आभाव। अतः हमें चाहिए कि हम अपना आत्म अनुशासन बनाए रखे और निरन्तर सफलता की ओर आगे बढ़े।

श्री राजेश अग्रवाल
प्रबन्धक

'नई तकनीक से हम समाज में ला सकते हैं पॉजिटिव चेंज'

विकास की नई दिशा में आगे बढ़ते हुए 21वीं सदी की पीढ़ी एक नये और उत्साहित युग की ओर बढ़रही है। इस पीढ़ी के युग सशक्त साहसी और सोचने में नये दिमागी दृष्टिकोण लाते हैं। जो आने वाले समय को सजीव और सुरक्षित बनाने में मददगार साबित हो सकते हैं। 21वीं सदी के युग न केवल तकनीकि उन्नति में महारत हासिल कर रहे हैं बल्कि सामाजिक परिवर्तन में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में नए तरीके निकाले हैं, प्रोफेशनली और शैक्षणिक दोनों को ही आनलाइन और आसान किया हैं; सिसे भविष्य म शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा। ये युवा न केवल अपने प्रोफेशनल क्षेत्र में महारत हासिल कर रहे हैं, बल्कि साथ ही वे खुद को नए तरीके से समाज सेवा में भी समर्पित कर रहे हैं। हमारे युवा पर्यावरण संरक्षण में युवाओ को इकट्ठा कर साफ-सफाई वृक्षारोपण आदि कर रहे हैं। सिर्फ पर्यावरण ही नहीं आज के युवा बच्चों की शिक्षा ओर समाज के विकलांग वर्गो की भी मदद कर रहें हैं। ये लोगों को बताते है कि हम सभी के लिए शिक्षा कितनी जरूरी हैं। कई ऐसी समाज सेवी संस्थायें हैं जो अपने समय और शक्ति का प्रयोग कर शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर लोगों को जागरूक करने में लगे हैं।

यह पीढ़ी न केवल स्वयं की तरक्की में दृढ़संकल्पित है, बल्कि उन्होंने विश्वास किया है कि वे समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। उन्होंने अपनी पीढ़ी के जीवन में नए मानदंड स्थापित किए है और नए सोच के साथ मार्गदर्शन किया हैं। 21वी सदी के युवा देश के नेतृत्व में नए दृष्टिकोण और सोच का प्रतीक है। 21वीं सदी की पीढ़ी ने हमें य सिखाया है कि उनकी सोच और काम हमारे समाज को एक नए और उज्जवल भविष्य की ओर ल जा सकती है।

श्रीमती ट्रिवंकाल अग्रवाल
प्रधानाध्यापिका

'जीवन में शांति कैसे पाया जाये'

इस दुनिया में सभी लोग शान्तिपूर्ण जीवन जीना चाहते हैं। शान्ति का अर्थ सभी के लिए अलग-अलग होता है। कुछ लोगों के लिए यह सुरक्षा और शारिरिक तकलीफ का न होना है।जबकि कुछ लोगों के लिए ये आन्तरिक सन्तुष्टि की अवस्था में रहना हैं। जब हम विश्व स्तर पर शान्ति को देखते हैं तब हम इसे युद्ध झगड़े और दंगे फसाद का न होना मानते हैं।

आश्चर्य जनक बाद यह है कि कई लोगों द्वारा लम्बे समय से चली आ रही शान्ति की खोज के बाद भी इसको पाना हमें काल्पनिक लगता है। क्योंकि बहुत कम लोग ऐसे हुए हैं जिनको अपने आपमें शान्ति प्राप्त हुई है। मेरे विचार से इस धरती पर ऐसा कुछ भी नहीं होता जो हमें हमेशा शान्ति दे सके। इसलिए शान्ति को पाना सच में मुश्किल है। परन्तु फिर भी हमें विचार करना होगा कि वास्तव में शांति है क्या?

शब्दकोष के अनुसार दुःख और कलह से निजात पाना ही शान्ति है, और यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें सुकून और खामोशी होती है। इसी परिभाषा में इस प्रश्न का उत्तर छुपा हुआ है कि शान्ति को पाना इतना मुश्किल क्यों है। अगर हम बाहरी जिन्दगी में शान्ति को ढूढ़ते हैं तो हमें कुछ ही क्षणों की शान्ति-प्राप्त होगी। निश्चित रूप से हमारे जीवन में ऐसे मौके भी आते हैं, जब हम अपने नजदीकियों के साथ आनन्द विभोर होते हैं या कुछ ऐसे क्षण होते हैं जब हम अपनी उपलब्धियों पर खुशी का इजहार करते हैं। अगर देखा जाय तो ऐसे क्षण कुछ समय के लिए होते हैं।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि इस जीवन में हमेशा की शांति पाना असम्भव है। क्योंकि हम अपनी जिन्दगी में बारी-बारी से सुख और दुःख के क्षणों से गुजरते हैं। अतः हमें यह समझ लेना चाहिए कि हम इस संसार को तो नहीं बदल सकतेः लेकिन हम अपने जीवन में नया आयाम जोड़ सकते हैं जिससे कि शांति प्राप्त की जा सके।

संत महापुरूष हमें बताते हैं कि यह संसार कुछ और नहीं मात्र मिथ्या है, यह सृष्टि प्रभु की रचना है जो कि सपने के समान है। हमारी आत्मा जब अज्ञानता की अवस्था में होती है तब उसका ध्यान अन्तर्मुखी होता है। अतः कहा जा सकता है कि सच्ची शान्ति तभी शुरू होती है जब हमारी आत्मा पिता परमेश्वर का अनुभव करती हो, और पिता परमेश्वर को केवल ध्यान और अभ्यास के द्वारा ही पाया जा सकता है।

श्रीमती माला सेठ

अध्यापिका

:: विद्यादान ::

सबसे अच्छा विद्या दान, इससे बढ़कर कोई न दान।
अँधेरे को दूर भगाए, अनपढ़को विद्वान बनाए।।
विद्या धन को जो बांटता, ज्ञान के दीपक जो जगाता।
उसकी बढ़ती रहती ज्ञान, नहीं कोई उसके समान।।
विद्या से खुशहाली आए, मन प्रसन्न फिर हो जाए।
विद्या सब का ज्ञान बढ़ाए।।
अपनाना है इसको जरूरी, नहीं तो जिंदगी कहलाती अधूरी।
विद्या दान है श्रेष्ठ कर्म, और मनुष्य का है धर्म।।
विद्या के बदौलत मिलता, जग में मान और सम्मान।
कोई नहीं विद्या के बराबर, इसको करना है इसका आदर।।

:: पहेली ::

- उछल-कूद कर मन बहलाऊँ, फिर भी सा की लातें खाऊँ। (फुटबाल)
- कौन सा पान ऐसा, जिसको हम खा नहीं सकते। (जापान)
  एक लड़का माली का, कुर्त्ता पहने जाली का
- अन्दर से काम, पत्थर को सलाम करें। (नारियल)
  कौन सा ऐसा फूल है जो कभी नहीं खिलता। (अप्रैल फूल)

....

भागों नहीं, मुकाबला करो

एक बार किसी व्यक्ति ने स्वामी विवकेानन्द से पूछा- ''आप अपने जीवन में कितनी बार डरे है और कब!''

स्वामी जी बोले- ''मै एक बार डरा हूँ। उस समय मैं छोटा था।मैं सत्य की खोज में निकला था। घूमते-घूमते काशी पहुँचा। मैंने काशी में कई मन्दिर देखे। चलते-चलते मैं तालाब के किनारे पहुँच गया। दोपहर का समय था और आस-पास कोई नहीं था। एकदम सुनसान देखकर मुझे भय लगने लगा। सरोवर के किनारे एक मन्दिर था। वहाँ पर भी कोई नहीं था। तालाब के किनारे अनेक वृक्ष थे। उन वृक्षों पर बन्दर बैठे थे। एक बहुत बड़ा बन्दर मेरी ओर दौड़ा। उसने जोर से दाँत किटकिटाये। फिर वह पेड़ पर चढ़गया। मैं डर गया। मुझे डरा देखकर सारे बन्दर आ गये। उन्होंने चारों ओर से मुझे घेर लिया। वे मेरे आगे उछल-कूद करने लगे। मैं तेजी से चलने लगा। बन्दर भी तेज चलने लगे। मैं भागने लगा। वे भी साथ-साथ भाग कर मुझे डराते रहे।''

अचानक एक आवाज आई - ''भागो नहीं, मुकाबला करो।''

यह सुनकर मैं रूक गया। मैंने देखा, एक साधु उसी तालाब से स्नान करके निकला था। वह बूढ़ा साधु अब मेरे सामने खड़ा होकर बोला- ''डरो मत, इनका सामना करो।''

उन्हें सामने देखकर मेरा साहस बढ़गया। मैंने इधर-उधर देखा। साथ ही एक लकड़ी पड़ी थी। मैंने उसे उठा लिया। फिर मैं एक बन्दर की ओर लपका। वह भाग गया। फिर मैं दूसरे बन्दर की ओर दौड़ा, वह भाग गया। मैंने उस लकड़ी से सारे बन्दरों को भगा दिया।

साधु बोला'- ''बालक, तुम भाग क्यों रहे थे?'' मैंने कहा- मैं डर गया था।''

साधु बोला-''अगर मैं न आता तो ये बन्दर तुम्हें काट-काट कर घायल कर देते। मैंने कुछ नहीं किया, तुमने स्वंय साहस करके बन्दरों का सामना किया और उन्हें भगा दिया।'' इस घटना से हमेशा के लिए मेरा डर समाप्त हो गया, फिर मैं कभी नहीं डरा।

साहस करने वाले की सदा विजय होती है।

प्रियंका अग्रवाल
अध्यापिका

:: गीदड़ और शेर ::

जंगल में एक गुफा थी। उस गुफा में शेर और एक शेरनी रहते थे। शेरनी ने दो बच्चों को जन्म दिया। वे दोनों बच्चे बहुत नटखट थे।

शेरनी उन्हें बहुत प्यार करती थीं। शेर अपनी शेरनी के लिए जंगली जानवर लाता था, शेरनी और उसके बच्चे मिलकर खा लेते थे।

किसी दिन शेर गीदड़ का एक बच्चा ले आया। वह बच्चा बहुत छोटा था।शेरनी को बच्चे पर तरस आ गया। उसने अपने बच्चों के साथ उसे भी पाल लिया। वह गीदड़ का बच्चा शेर के बच्चों के साथ खेलता था।

शेरनी अपने बच्चों को शिकार करना सिखाती थी। उन्हीं के साथ गीदड़ भी सीखता रहा। वे अब आपस में बड़े मजे से रहते थे। शेरनी के बच्चे गीदड़ से छोटे थे इसलिए गीदड़ उन्हें डराता था। एक दिन बच्चों में झगड़ा हो गया। गीदड़ बोला-''मैं, तुम दोनों से ज्यादा ताकतवर हूँ।'' शेरनी के बच्चे बोले- ''ठीक है, किसी दिन देख लेंगें।''

एक दिन शेरनी के दोनों बच्चे और गीदड़ साथ-साथ खेल रहे थे। उसी हाथियों का एक झुण्ड आ गया। गीदड़ बोला- ''भागों, हाथी आ रहे हैं।'' शेर के बच्चे बोले- ''तुम तो हमसे अधिक ताकतवर हो फिर क्यों डरते हो।''

शेर के बच्चों ने गीदड़ को रोकना चाहा। गीदड़ भागकर गुफा में घुस गया। वहाँ से ही पुकार करके बुलाने लगा। वे दोनों बोले-''हम तो हाथियों को भगाकर ही लौटेंगे।'' यह कहकर शर के दोनों बच्चे हाथियों के झुण्ड पर टूट पड़े। गीदड़ ने दौड़कर शेरनी से हाथियों वाली बात कह दी।

शेरनी बोली- ''वह मेरे बच्चे हैं, हाथियों को भगाकर ही आयेंगे। तुम यहाँ से फौरन भाग जाओ वरना तुम्हारी पो खुल गयी तो मारे जाओगे।'' यह सुनकर गीदड़ भाग गया।

शेर बहादुर होता है तथा गीदड़ डरपोक होता है।
इसलिए शेर की तरह बहादुर बनना चाहिए।

हिरण का विवेक

एक दिन एक शिकारी शिकार खेलने के लिए सवेरे ही उठकर जंगल की ओर चल दिया। फिर उसने एक पेड़ पर मचान बाँधा और हिरण की बाट जोहने लगा।

एक हिरण उधर आया। फल के पेड़ को देखते ही उसके मुँह में पानी भर गया।तभी अचानक उसकी निगाह जमीन पर बने आदमी के पैरों के निशानों पर पड़ी, ''जरूर आसपास कोई शिकारी मौजूद है, जो मेरा शिकार करने की ताक में है।' हिरण ने सोचा।

उधर शिकारी ने हिरण को रूकते हुए देखा तो सोच में पड़ गया । फिर उसके दिमाग में एक विचार आया और उसने पेड़ से फल तोड़कर रास्ते में फेंकने शुरू कर दिए। उसने सोचा कि फलों के लालच में जब हिरण आगे बढ़ेगा तो वह उसे पकड़ लेगा।

लेकिन हिरण शिकारी की चालाकी ताड़ गया। उसे पेड़ की आड़ में बना मचान दिखाई दे गया था। फिर उसे एक तरकीब सूझी उसने सोचा कि क्यों न में पेड़ से बात करूँ, फिर देखता हूँ क्या होता है?

अरे भाई पेड़, रोज तो तुम फल जमीन पर गिराते हो, आज मेरी तरफ क्यों फेंक रहे हो?

हिरण बोला। मगर उस तरफ से कोई आवाज नहीं आई।

❖❖❖

मामा

मामा मेरा मस्त-मस्त है, मामा नहीं वो पाजामा है,
दिन भर आफिस में रहता है। मन का भोला भाला है,
मुझसे लड़ता उससे भिड़ता, मामा है गुलारा है,
नहीं वो माँ से डरता है, मेरी माँ का प्यारा है।।

❖❖❖

राजा की बेटी

एक बड़े राजा की बेटी,
दो दिन को बीमार पड़ी।
तीन सन्तरी दौड़े आये,
चार दवा की पुड़िया लाये।
पाँच मिनट पानी गरमाया,
छः-छः घण्टे बाद खिलाया।
सातवें दिन वह कुछ मुँह से बोली,
आठवें दिन कुछ आँखें खोली।
नवें दिन कुछ ताकत आयी,
दसवें दिन वह दौड़ लगायी।।

धनी कौन

बहुत दिनों की बात है। बत्तख में इब्राहिम नाम का बादशाह शासन करता था। एक बार उसे धन की जरूरत हुई। प्रजा पर कर वह लगाना नहीं चाहता था क्योंकि बादशाह जानता था कि ऐसा करने से गरीबों को परेशानी होगी।

अतएव इब्राहिम ने अपने राज्य में एक घोषणा कराई। वह यह है कि बादशाह को राज्य के विकास के लिये कुछ धन चाहिए। जो अमीर हो, अपनी इच्छा से धन देना चाहता हो, वह बादशाह के पास चला आये।

दूसरे ही दिन नगर का सबसे धनी व्यक्ति बादशाह के पास आया। उसके हाथ में सोने की अशर्फियों से भरी थैली थी। बादशाह को झुककर नमस्कार करते हुए, उनके आगे थैली रख दिया, बादशाह उस धनी को अच्छी तरह जानता था। वह बहुत धनवान था, पर कन्जूस भी था। पैसे को बड़ा सँभाल कर रखता था।

हूजुर! गुस्ताखी माफ करें, बड़ी विनम्रता से वह कहने लगा पर मेरी दृष्टि में वह व्यक्ति धनी नहीं है जो धन को जोडकर रखता है।मैं तो उसी को धनी मानता हूँ जो दूसरों की सेवा में,उपकार में धन को खर्च करता है। वह व्यक्ति जो धन को न प्रयोग करता है और न किसी को देता है, धनवान कैसे कहा जा सकता है? यदि किसी गरीब को धन की भूख नही है, जो उसके पास है, उसी में वह सन्तोष पाता है, तो मैं उसे ही धनी मानता हूँ। नगर सेठ का सिर लज्जा से झूक गया। अशर्फियों से भरी थैली उठाकर वह चुपचाप चलता बना।

❖❖❖

राजा कौन बनेगा

एक राजा था। उसके दो लड़के थे। राजा बूढ़ा हो गया था। एक दिन उसने अपने दोनो बेटों को बुलाया और कहा कि अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ। राज्य की देखरेख नहीं कर सकता हूँ। तुम दोनों में से किसको राजा बना दिया जाय, तो बड़ा वाला लड़का कहता है हमकों तो छोटा बाला लड़का कहता है हमको।

तभी राजा को एक उपाय सूझा और उन्होंने अपने दोनों लड़कों को एक-एक रूपये दिये और कहा कि बाजार जाओ ओर कोई ऐसी वस्तु खरीदो जिससे महल भर जाये। दोनों बच्चे बाजार गये और बड़े लड़के ने सोचा कि भूसा ले चलें जिससे सारा घर भर जायेगा। तब भूसा एक रूपये में ढेर सारा मिल जाता था। और वह भूसा लेकर वापस आया। राजा ने कहा, क्या लाये हो 'तो बड़ा वाले लड़के ने कहा।' 'भूसा ले आया हूँ।' राजा ने कहा 'इसे महल के हर कमरे में रख दीजिये।' पर ये न हो सका और भूसा कम हो गया। तभी दूसरा लड़का पहुँचा तो राज ने उससे पूछा, 'तुम क्या लाये हो।' तो छोटा लड़का कहता है, 'हम मोमबत्ती लाये हैं।' तो राजा ने कहा जाओ महल में सब जगह जला दो, तो लड़के ने जाकर जला दिया और सारा महल जगमगा उठा। राजा ने अपने छोटे लड़के पर खुश श्होकर अपना सारा राज पाट उसे दे दिया।

इलाहाबाद

भारत का समृद्ध शहर इलाहाबाद जिसका पूर्व नाम प्रयाग था, मुगल शासक अकबर ने बदल कर अलाहाबाद कर दिया था लेकिन 2018 में इसका नाम फिर से प्रयागराज पड़ा। अपनी संस्कृति के कारण विश्व विख्यात है। इस शहर में पावन गंगा-यमुना और विलुप्त सरस्वती नाम तीन नदियों का संगम होता है। यहाँ पर प्रति बारह वर्षो पर कुम्भ मेले का आयोजन होता है और यहाँ यह उस समय कई करोड़ जनसमुदाय संगम में स्नान करने आते हैं। कहते हैं 'गंगे तब दर्शानात् मुक्तिः।' गंगा का मिलन यमुना और सरस्वती के साथ होता है। यही पर अक्षयवट कई युगों से यमुना नदी के किनारे खड़ा है। इलाहाबाद के निवासी शांतिप्रिय होने के साथ धार्मिक भी है। यहाँ पर कई प्रसिद्ध मन्दिर, गिरजाघर और मस्जिद है। इस शहर में शिक्षा का महत्व काफी ज्यादा है। यहाँ पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय है। आजादी के पूर्व यह शहर क्रांतिकारियों का मुख्य केन्द्र था। यहाँ की भाषा शुद्ध तथा साहित्यिक है। प्रयागराज भारत की संस्कृति का एक प्रतीक चिन्ह है।

बच्चों की सरकार

बच्चे ही अगर प्रधानमन्त्री होते, बच्चे ही अगर मुख्यमन्त्री होते।
तो कैसा बना देते यह देश, बदल देते भारत का भेष।
कहीं ना सिगरेट शराब बिकती, कहीं ना होता दंगा-फसाद।
अच्छाई का होता राज, मन्दिर-मस्जिद कुछ न होता।
प्यार के सागर बहते रहते, कहीं न कोई ज्यादती होती।
मनुष्यता बरबाद न होती, अगर बच्चों की सरकार होती।

- चुटकुले -

1) अंग्रेजी टीचर - अपनी अंग्रेजी सुधारने के लिए अंग्रेंजी का अखबार पड़ा करों
विद्यार्थी - जी शुक्रवार को तो मैं अवश्य पड़ता हूँ।
टीचर - शुक्रवार को ही क्यों?
विद्यार्थी - जो सिनेमा में उसी दिन फिल्म बदलती है।

2) पिता जी- संजय क्यो रो रहे हो?
संजय - गुरूजी ने मारा।
पिताजी -तूने क्लास गड़बड़ की होगी।
संजय - नहीं, मैं तो क्लास में चुपचाप सो रहा था।

-मेरी गुड़िया -

मेरी गुड़िया सबसे प्यारी, मेरी गुड़िया सबसे प्यारी।
मीठी-मीठी बाते करतीं, मेरे संग वो हर पल रहती।
मैं नाराज हो जाती हूँ, हँस-हँस कर वो मुझे मनाती।
पल भर में रोने लगती है, इसलिए तो मेरी गुड़िया।
मुझे बहुत अच्छी लगती है।

दस मोती का ज्ञान

(1) जीतने के लिए कोई चीज है तो - (प्रेम)
(2) पीने के लिए कोई चीज है तो - (क्रोध)
(3) खाने के लिए कोई चीज है तो - (गम)
(4) देने के लिए चीज है तो - (दान)
(5) दिखने के लिए कोई चीज है तो - (दया)
(6) कहने के लिए कोई चीज है तो - (सत्य)
(7) रखने के लिए कोई चीज है तो - (इज्जत)
(8) फेंकने के लिए कोई चीज है तो - (ईर्ष्या)
(9) छोड़ने के लिए कोई चीज है तो - (मोह)
(10) लेने के लिए कोई चीज है तो - (ज्ञान)

-अम्मा पढ़ने जाऊँगी -

अम्मा पढ़ने जाऊँगी मैं,
मुझे मँगा दो काली पट्टी।
देंखो इतनी बड़ी हो गयी,
कहाँ खेलती हूँ अब मिट्टी।
पापा की चिट्ठी आयेगी,
तो पढ़कर तुम्हें समझाऊँगी।
जो रामायण तुम पढ़ती हो,
वह पढकर मैं भी गाऊँगी।
लिख दो पापा को चिट्ठी,
वह छुट्टी में जब आयेंगे।
वह लायें या ना लायें कुछ,
पर मेरी पोथी लायेंगे।
रंग-बिरंगे होगी उसमें,
लाल-हरी-पीली तस्वीर।
और नाचती होंगी परियाँ,
रंग-बिरंगे पंखों से।
लिख दो अभी-अभी,
अम्मा पढ़ने जाऊँगी मैं।

अंश गुप्ता
कक्षा - 7

विद्या जीवन को सँवारती

विद्या जीवन को सँवारती,
विद्या से मिलता सम्मान।
ग्रहण किया है जिसने विद्या,
आदर पाता वह विद्वान।।(1)
विद्या से कुछ भी न बडा है,
विद्या से मिलती सद्बुद्धि।
जिसने सच्ची विद्या पाई,
होती उसके मन की शुद्धि।।(2)
हासिल हुआ उसे विद्या-धन,
उसका जीवन सफल हुआ।
सारा दोष समझ लो उसके,
अन्तर्मन में निकल गया।।(3)
विद्या से विहीन मानव,
नाना कष्ट उठाता है।
पर विद्या-धन जिसे मिला है,
वह महान बन जाता है।।(4)
यह विचार कर प्यारे बच्चों,
ज्ञानार्जन में जुट जाओ।
अच्छी विद्या पाने का ही,
अपना जीवन लक्ष्य बनाओ।।(5)

अंश अग्रवाल
कक्षा-5

वह कौन सती थी

1. जिसका चीर सात रंगों में आसमान तक बढ़ा था। (सती द्रोपदी)
2. जिसकी ननद ने उस पर कुशील होने का दोष लगाया था। (सती नीलीबाई)
3. जिसने पैर के अँगूठे से नगर के सात फाटक खोले थे? (सती मनोरमा)
4. जिसने बाइस बरस के बाद एक दिन का सुख भोगा था? (सती अंजना)
5. जिसने अपने सतीत्व से सर्प को फूल की माला बनाया था? (सती सोमा)
6. जो शील रक्षा हेतु कुएँ में कूद गयी थी, किन्तु जलथल हो गया था? (सती मुण्डिका)

क्यों खोती जा रही है बेटियाँ

कुछ कहना चाहती हूँ।
अपने हिस्से का जीवन जीना चाहती हूँ।
दुनिया के रंग जीवन के संग
मैं भी जीना चाहती हूँ।
माँ तेरी कोख में आई
फिर भी जन्म क्यों न ले पाई
तेरा खून तो पाया मैंने
फिर दूध क्यों न पी पाई
अस्तित्व अपना मिटने पर भी
आँसू तक न बहा पाई
दुर्दशा देखकर मेरी तो
ब्रह्म भी पछताया होगा
संग मुझे ले जाते समय
यमराम भी घबराया होगा।
जन्म लेने दो मुझे
बेटे से बढ़कर दिखलाऊँगी।
धरा के सुख क्या है
तोड़ आसमाँ से सुख लाऊँगा
अगर बेटी को मखाओगे
ममता माँ की कैसे पाओगे।
खो जायेगा बेटी का प्यार
दुलार किससे करवाओगे।
अन्तिम सन्देश यही है मेरा
बचला तो अजन्मी बिटिया को
अस्तित्व वरना मिट जायेगा
इस दुनिया से मानव का।

पर्वत और गिलहरी

अराध्या (4)

पर्वत और गिलहरी में
हुई एक लड़ाई
पहले ने दूसरे से कहा 'घमंडी'
दुमयुक्त जानवर ने जबाब दिया
तुम निस्संदेह हो बहुत बड़े
परन्तु सब प्रकार की चीजें और मौसम
मिलकर लेने पड़ते है (बनाने के लिए)
एक वर्ष (और)
एक गोला
और मेरे अनुसार नहीं है कोई शर्म
मेरे जैसा होने में
अगर मैं नहीं हूँ तुम्हारा जितना बड़ा
तुम नहीं हो छोटे मेरे जितने
और मुझसे आधे भी फुर्तीले
मैं इंकार नहीं करती कि तुम बनाते हो
एक बहुत सुन्दर गिलहरी मार्ग
योग्यताएँ होती है अलग सभी बेहतर और
बुद्धिमानी से दी हुई
अगर मैं अपने पीठ पर जंगल नहीं ले जा
सकता, तुम अखरोट नहीं तोड़ सकते।

माँ किस लिए होती है

माँ तुम्हें प्यार करने के लिए होती है
चाहे तुम अच्छे या बुरे हो
माँ बाँटने के लिए होती है
जो कुछ तुम्हें दुःखी बनाता है।
माँ हँसने के लिए होती है।
तुम्हारे मनपसन्द चुटकुलों पर
माँ तुम्हारी मदद के लिए होती है।

आँखे बया करती अपनी जुबानी

इधर-उधर सारी दुनियाँ,
खूब घूम फिर आती आँखें।
सबको देख लिया करती पर,
खुद को देख न पाती आँखें।।

कुछ आँखें है काली, पीली,
कुछ भूरी, नीली, चमकीली।
हाथी, घोड़ा, बकरी, बन्दर,
सबके ही है होती आँखें।।

कुछ आँखें है जत नुकीली,
कुछ है गोल-गोल रोबीली।
सबके ही है होती आँखें,
कुछ हँसती, कुछ रोती आँखें।।

कहानी

(1)

कहते हैं .... काला रंग 'अशुभ' होता है।
पर स्कूल का वो 'ब्लैक बोर्ड'
लोगों की जिन्दगी बदल देता है।

(2)

मास्टर जी : अच्छा बताओं पप्पू, गर्मी लगती है तो हम कूलर चला लेते हैं। पर ठंड लगती है तो हमें क्या करना चाहिये?

पप्पू : कूलर के चारों ओर आग लगा देना चाहिये जिससे वह गर्म हवा देगा।

माता-पिता के चरणों में स्वर्ग है

दिन का सूरज यहाँ नहीं ढलता है।
खुशियों को सूकून यहाँ मिलता है।
माँ के आँचल को ठण्डी छाया है
पिता के प्यार का सर पे साया है।
थाम कर हाथ चलना सिखाया हमें।
धूप की कपटियों से बचाया हमें।
आता नहीं चुकाना उनका हमपे जो कर्ज है।
माता-पिता के चरणों में स्वर्ग है।
माता-पिता के चरणों में स्वर्ग है।

Poem
Pussy Cat

Pussy cat, Pussy Cat
Where have you been?
II've been to London,
To \visit the queen,
Pussy cat. Pussy Cat,
What did you there ?
I frightened a little mouse,
Under the chair

प्रेरणादायक वाक्य

1. जीवन में दो व्यक्ति असफल होते हैं जो सोचते हैं पर करते नहीं।
2. मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।
3. आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदत बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदतें आपका भविष्य बदल देगीं।
4. भगवान के भरोसे मत बैठिये क्या पता भगवान आपके भरोसे बैठा हो।
5. सफलता का आधार सकारात्मक सोच और निरन्तर प्रयास।
6. सफलता का चिराग परिश्रम से जलता हैं।
7. लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिये कभी-कभी गुच्छे की आखिरी चाभी भी ताला खोल देती है।

आज हम आपको खूबसूरत की परिभाषा बताएगें

1. खूबसूरत हैं वे लोग जो किसी के दुःख में शामिल हो जाते हैं।
2. खूबसूरत है वे आँखें जो एक ही सपने में सारी दुनिया देख लें।
3. खूबसूरत है तो हाथ जो किसी भी मुश्किल के वक्त में सहारा बन जाये।
4. खूबसूरत है जो जज्बात जिसमें किसी का किरदार आ जाए।

ज्ञानी के मुख से झरे सदा ज्ञान की बात।
हर एक पंखुडी फूल, खुशबू की सौगात।

मैं जीने के लिए अपने माता-पिता का ऋणी हूँ।
पर अच्छे से जीने के लिए अपने गुरू का।

मेरे व्यक्तित्व और मेरे व्यवहार को।
कभी मत मिलाइयेगा।

क्योंकि मेरा व्यक्तित्व मैं हूँ।
और मेरा व्यवहार आप पर निर्भर करता है।

Mummy Darling Papa Darling

Mummy Darling, Papa Darling,
I love you! I love you!
See the baby danching,
Just for you, Just for you,
See the baby smiling,
Just for you, Just for you.

शिक्षक

शिक्षक क्या है- यह प्रश्न बहुत ही आसान है। परन्तु इसका उत्तर अत्यन्त कठिन है। कोई व्यक्ति अच्छे भाषण देने से या डिग्रियाँ पा जाने से शिक्षक नहीं बन जाता है। शिक्षक वह नहीं जो जाति-पाति, छुआ-छूत आदि अन्य निकृष्ट भावनाआं को मानकर छात्रों से भेदभाव करता है। शिक्षक वह महान आत्मा है जो भगवान से भी बड़े माने जाते हैं। शिक्षक वह होता है जो किसी विद्यार्थी या व्यक्ति के अवगुणों को नष्ट करके उसके अन्दर सच्चाई व अच्छाई का चरित्र निर्माण करता है। उनके अन्दर ज्ञान के प्रकाश को प्रज्जवलि करता है।

उस विद्यार्थी के जीवन की समस्याओं को हल करता है तथा हर कुरीतियाँ को नष्ट करके उसके वर्तमान जीवन तथा भविष्य में जीने की प्रेरणा देता है। जिसके अत्यधिक परिश्रम के फलस्वरूप उस विद्यार्थी को समाज में आदर व सम्मान प्राप्त होता है तथा उसके अन्दर देशप्रेम आदि की अच्छी भावनाएं उत्पन्न होती है। इससे उसका भविष्य उज्जवल होता है। शिक्षक द्वारा ही हमें समाज में रहन-सहन की आदतें प्राप्त होती है। वे किसी कार्य को नियमित व संयमित होकर अनुशासित रूप से करते हैं। वे किसी विद्यार्थी के बातों का बुरा नहीं मानते हैं क्योंकि उन्हें पता होता है कि उसमें उसका कोई दोष नहीं इसमें उसके संगति का दोष होता हैं। इस प्रकार के विद्यार्थी को वे अच्छा बनाने का प्रयास करते हैं। कहीं विद्यालयों या कालेजों के शिक्षकों को लोग बुरा मानते हैं। लेकिन ऐसा होता नहीं है क्योंकि कोई शिक्षक बुरा नहीं होता है न ही वह कालेज कोई शिक्षक या कालेज खराब होता है। उसमें जो कुछ भी त्रुटि होती है। किसी अच्छे कालेज की पहचान वहाँ के विद्यार्थियों से होती हैं। जिस तरह किसी राष्ट्र की पहचान वहाँ के नागरिकों से होती है। शिक्षक को प्राचीन समय से ही महान माना जाता है। प्राचीन समय में लोग गुरूजी कहते थे। इन सबका प्रमाण महाभारत रामचरित मानस आदि महाकाव्यों खण्ड-काव्यों व ग्रन्थों में मिलता है। प्राचीनकाल से शिक्षक या गुरू को महान बतलाया गया है। कवियों व लेखकों ने भी गुरू को महान कहा है। कवि ने कविता के अनुसार गुरू की विशेषताओं का वर्णन किया है। कवि कबीरदास जी ने लिखा है कि -

बलिहारी गुरू आपणें, घोहाड़ी कै बार।
जिनि मानिष तें देवता, करत न लागी बार ॥

अर्थात् मैं अपने उन गुरू पर न्यौछावर हूँ और मैं अपना शरीर बार-बार अर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझको अपने ज्ञानरूपी उपदेश से मनुष्य से देवता बनाने में क्षणभर की देर न लगी।

शिक्षक या गुरू के द्वारा प्राप्त ज्ञान के विषय में कवि ने कहा कि -

बूड़े थे परि ऊबेर,गुरू की लहीर चमकि।
मेरा देव्या जरजरा, ऊतीर पड़े फरकि॥

अर्थात् - मैं इस बुराई के अन्धकार में डूब चुका था। लेकिन गुरू की ज्ञान रूपी उपदेश ने मुझे अन्धकार से निकाला। में जिस नाँव पर सवार था वह अत्यन्त जरजर है अर्थात् गुरू की कृपा से में बच गया जो मेरी उन्नति को नष्ट करने वाली है। गुरू के द्वारा प्रदान ज्ञान से में नष्ट होने से अर्थात् बुराई के अन्धकार से बच गया।

किसी व्यक्ति की उन्नति शिक्षक या गुरू की सहायता से होती है। शिक्षक माता-पिता के समान होता है।

मैं शिक्षक को अपने माता-पिता के समान मानता हूँ। क्योंकि शिक्षक हमें अच्छा आचरण व समृद्धि प्रदान करते हैं।

श्रीमती अंजुला अग्रवाल
अध्यापिका

❖❖❖

आत्म-विश्वास

आदमी कितना भी मेहनत कर लें, अगर अपने आप पर भरोसा नही है तो वह जीवन में सफल नहीं हो सकता बाहरी साधन इंसान के लिए जरूरी होते हैं, कुछ हद तक मदद भी करते हैं, लेकिन आत्म विश्वास के बिना उसकी गाड़ी आगे नहीं बढ़सकती।

किसी भी काम को करने वाले आदमी में यदि यह विश्वास है कि उसे वह जरूर पूरा करके ही रहेगा तो उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

जिस प्रकार गाँधी जी बचपन में डरपोक थे, लेकिन आगे चलकर ऐसे निडर बने कि दुनिया की कोई ताकत उन्हें डरा नहीं सकी। आत्म-विश्वास की नींव पर खड़ा किया गया भवन हमेशा सुरक्षित रहता है।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने ठीक ही लिखा है हमारी कामयाबी इस बात में नहीं है कि हम कभी गिरे ही नहीं हमारी कामयाबी इसमें है कि गिरते ही हम हर बार उठकर खड़े हो गये।

दुनिया बदल गई

लिखते थे पहले जहाँ स्वागतम्
लिखते है वहीं कुत्तों से सावधान।
आदेश है उनका आये न कोई
कुत्ते ही उनकी जुबान हो गये
बुजुर्गो का असर अब दिखाता नहीं
शायद अब बच्चे जवान हो गये
शक्ल इन्सान की बदलने लगी।
लगता है कुत्ते इंसान हो गये।।

गुरू की देन

कभी डाँट-डपट कर, प्यार जताया।
कभी रोक-टोक कर, चलना सिखाया।
कभी काली स्लेट पर चाक से।
एक उज्जवल भविष्य का सूरज उगाया।

कभी ढाल बनकर हर मुश्किल से बचाया
कभी हक के लिए लड़ना सिखाया।
कभी गलती बताकर, कभी गलती से बचाकर
एक सच्चे गुरू का फर्ज निभाया।

कभी माता-पिता बन दी सलाह।
कभी दोस्त बन, हौसला बढ़ाया।
आज कहते हैं। उन गुरूजन को 'धन्यवाद'
जिन्होंने हमें इस काबिल बनाया।

दहेज एक कुप्रथा

एक दिन मैं मेला घूमने गया। वहाँ मेंने कई तरह की दुकानें, खिलौने आदि देखा। परन्तु मैंने एक ऐसी दुकान देखी जा सबसे अलग थी और मैंने ऐसी दुकान पहले कभी न देखी थी। उस दुकान में कई नौजवान व्यक्ति सुन्दर पोशाक पहने बैठे थे और उसका संचालन एक महिला कर रही थीं। इसी बीच एक आदमी आया और महिला से कहा मुझे अपनी पुत्री के विवाह के लिए एक लड़के की जरूरत है जो सरकारी नौकरी करता हो। महिला ने पूछा आप क्या काम करते हैं।

व्यक्ति ने कहा - मैं अध्यापक हूँ। महिला बोली आप अपनी हैसियत के हिसाब से लड़का चुन लीजिये।

व्यक्ति ने एक लड़का पसन्द किया जो प्राइवेट इंजीनियर था उसने महिला से उस लड़के की कीमत पूछी तो महिला ने कहा-
इसकी यहाँ नहीं कोई रेट है,
इससे ज्यादा तो बैंक के चपरासी की रेट है।

व्यक्ति ने इस बार जो लड़का पसन्द किया वह डॉक्टर था। उसने महिला से डॉक्टर की कीमत पूछा तो महिला ने कहा -

इसकी कीमत तो कोई नेता-मंत्री ही लगा सकते हैं। इस तरह से उस व्यक्ति को कोई लड़का पसन्द न आया और वह घर वापस चला गया।

कक्षा की मॉनीटर

ये है कक्षा की मॉनीटर
झूठा शान दिखाती है।
झूठी सच्ची गुरू से कहकर
हम सबको दण्ड दिलाती है।।
कक्षा में खुद शोर मचाती।
हमको दोषी ठहराती है।
लडडू पाती सभी विषय में
नकल चोर कहलाती है।
हम सब इनके हाथ जोड़ते,
पर ये ऐठी जाती है।
इनकी शान क्लास में केवल
बाहर धक्के खाती है।।
सीट मिलती कभी गुरू की,
खुद ही गुरू बन जाती है।
उन्हें दीजिए बदल गुरू जी,
हम सब यही मनाते है।।

बालक का मनोरथ (कविता)

मैया मैं अब खूब पढ़ूँगा।
कभी किसी से नहीं लड़ेगा।
पढ़-लिख होऊँगा होशियार,
सभी करेंगे मुझसे प्यार
पैसे खूब कमाऊँगा मैं।
बढ़िया घर बनावाऊँगा
सबको ह्रदय लगाऊँगा।।
मेरा सब कुछ होगा उनका।
अलग नहीं रखूँगा तिनका।

माही अनुराग - 8

बिना यूनिफार्म के स्कूल

गौर से सोचा तो पाया
यूनिफार्म हम सबको एक पहचान दिलाती है
छोटे बड़े के अंतर को मिटाती है।
सद्भाव हमे सिखलाती है।
विद्यार्थी जीवन है अनमोल।
यह बात सदा याद दिलाती है।

विश्वास करो कर्म में

मैं निर्धनता हूँ,
तुम मुझे मिटाना चाहते हों,
पर मुझे प्रिय हो-
मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ।
इसलिए फटे पुराने कपड़े पहनते हो
फैलाकर हाथ बाबूजी बाबूजी करते थे।
मैं तुम्हारा नसीब हूँ।

लेकिन तुम चाहो तो कीचड़ में कमल खिला सकते हो
धरती आकाश मिला सकते हो।
मुझको समझो, श्रम को अपनाओं,
मैं तुम्हारी पाठशाला हूँ।
पढकर विश्वास करो कर्म में,
जागो, उठो जमाने को हिला दो
इस दुनिया में अज्ञान को साथ मुझे भी मिटा दो।

देखा विश्वास बुला रहा है,
उगता सूरज तुम्हें राह दिखा रहा है।

श्रीशर्मा - 7

युधिष्ठिर की भूल

महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। पाण्डवों ने विजय की खुशी में एक महान यज्ञ किया। इस यज्ञ में दूर-दूर से विद्वान और पण्डित आये थे! महाराज युधिष्ठिर ने यज्ञ में आने वाले विद्वानों और याचकों को प्रातः से सूर्यास्त होने तक भरपूर दान दिया। दान पाने वाले उनकी जय-जयकार करते थे!

एक दिन सायंकाल अँधेरा होने पर भण्डार-गृह का द्वार बन्द कर महाराज युधिष्ठिर आराम करने के लिए जाने लगे। उसी समय गुरू याचक के आकर महाराज को प्रणाम किया और दान देने की प्रार्थना की पर भण्डार गृह तो बन्द हो चुका था। स्वागत करते हुए महाराज युधिष्ठिर ने याचक से अगले दिन प्रातः आने के लिए कहा।

उसी समय किसी अचानक कार्य के लिए भीमसेन वहाँ आये। महाराज के द्वारा कहे गये शब्दों को उन्होंने सुन लिया। आने वाले याचक को अगले दिन के लिए लौटा देना उन्हें अच्छा नहीं लगा। दान देने जैसे शुभ कार्य को क्यो टाला जाए? महाराज ने आज तक द्वार पर आये हुए किसी याचक को वापस नहीं लौटाया था। भीम तत्काल महाराज के सामने पहुँचे सिर झुकाकर बोल,'' वाह महाराज! आप महान हैं। आपने तो समय को अपने वश में कर लिया! आपकी आज्ञा से अब कल को अवश्य ही आना पड़ेगा!''

युधिष्ठिर को अपनी गलती फौरन समझ आ गई! ''अरे, यह मैंने क्या कह दिया। समय पर तो किसी का अधिकार नहीं। भगवन्! मुझे क्षमा करना।'' फौरन भण्डार गृह खोलकर महाराज ने याचक ने निवेदन किया, ''महाराज, इच्छानुसार ग्रहण कीजिए और मेरी भूल को क्षमा कीजिए।''

समय को कोई अपने वश में नहीं कर सकता। अतः समय का सदा मान करना चाहिए। कभी किसी को टालना उचित नहीं है।

श्रीमती दीप्ती अग्रवाल
अध्यापिका

❖❖❖

मालिक की दुत्कार-कुत्ता वफादार

एक गाँव में महेन्द्र नाम का शिकारी रहता था। उसके पास बडा भयानक भेड़िये जैसा एक कुत्ता था। महेन्द्र जब कभी भी शिकार के लिये जंगल जाता, तो अपने कुत्ते को अवश्य ले जाता।

एक बार महेन्द्र बीमार पड़ गया। उसके न पत्नी थी, न बच्चे , न माँ-बाप, न भाई-बहन। महेन्द्र अपने परिवार में बिल्कुल अकेला था। कुछ दिन तक गाँव वाले महेन्द्र को खाना-पीना पहुँचाते

रहे, किन्तु जब वह एक महीने तक ठीक नहीं हुआ तो धीरे-धीरे उन्होंने उसके घर जाना बन्द कर दिया। महेन्द्र के पास उसका बफादार कुत्ता चौबीस घण्टे बैठा रहता। वह अपने स्वामी की बीमारी से बड़ा दुःखी था।इसी दुःख में उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया। महेन्द्र बहुत चितिंत था। उसकी बीमारी ठीक हाने का नाम ही नहीं ले रही थी। पिछले दो दिनों से अन्न का एक भी दाना उसके मुँह में नहीं गया था। बीमारी और भूख ने उसे इतना चिड़चिड़ा बना दिया था कि एक दिन सबेरे-सबेरे उसने अपने बफादार कुत्ते को मार कर घर से निकाल दिया। कुत्ता बड़ा समझदार था। वह सीधा जंगल पहुँचा और दो बड़े-बड़े खरगोश मारे, उन्हें मुँह में दबाया और दोपहर होने से पहले ही अपने स्वामी के पास, सामने आ खड़ा हुआ। महेन्द्र का भूख के मारे बुरा हुआ था। बीमारी ने उसका शरीर इतना आशक्त बना दिया था कि वह हिल-डुल

भी नहीं सकता था। बिस्तर पर पडा हुआ वह दुःखी हो रहा था, तभी दो खरगोश देखकर चौक पड़ा। भोजन देखकर महेन्द्र के शरीर में न जाने कहाँ से शक्ति आ गई। उसने उठकर अपने कुत्ते की पीठ थपथपाई और एक खरगोश उसने स्वयं भूनकर खाया व दूसरे अपने कुत्ते को खिलाया। पन्द्रह दिन तक यही क्रम चलता रहा। कुत्ता प्रतिदिन प्रातः जंगल जाता और दोपहर तक दो-तीन खरगोश मारकर ले जाता। महेन्द्र कुछ दिनों में ठीक हो गया। जब वो दोनों फिर से पहले की तरह शिकार करने लगे।धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गये। एक बार कुत्ता बीमार पड़ गया। महेन्द्र ने उसे दो-चार दिन खाना-पीना दिया, फिर लापरवाही करने लगा। बेचारा कुत्ता चुपचाप एक कोने में पड़ा रहता। कुछ ही दिनों में कुत्ते की बीमारी महेन्द्र को अखरने लगी। वह अकारण ही उसे मारता ओर खाना-पीना बन्द कर दिया। बेजुबान निरीह प्राणी चुपचान सब सह लेता।

एक दिन महेन्द्र को जंगल में कोई शिकार नहीं मिला वह क्रोध में झुझलाता हुआ आधी रात को घर लौटा, सारा-गुस्सा कुत्ते पर उतार दिया। इतना ही नहीं, उसने बीमार कुत्ते को चमडे की बेल्ट से निर्दयतापूर्वक मारा और घर से निकाल दिया। बेचारा कुत्ता रातभर अपने अत्याचारी स्वामी के दरवाजे पर कराहता रहा। दूसरे दिन सबेरे जब महेन्द्र बाहर आया तो कुत्ते को देखकर उसे फिर क्रोध आ गया। उसने उसे फिर मारा ओर रस्सी से बाँधकर जंगल ले गया। महेन्द्र ने कुत्ते को एक पेड़ से बाँधा और वापस आ गया। उसने सोचा के पेड़ से बँधे कुत्ते को जंगली जानवर खा जायेंगे या वह वहीं बँघा-बँधा मर जायेगा। वह बीमार कुत्ते को किसी भी कीमत पर अपने पास नहीं रखना चाहता था। कुत्ते को जंगल में छोड़कर महेन्द्र ने राहत की साँस ली। जब वह अकेले की शिकार करता, खात-पीता और मस्त रहता। इसी तरह कई वर्ष बीत गये। महेन्द्र अब बूढ़ा हो गया था। उसमें जंगल जाने और शिकार करने की शक्ति भी नहीं रह गई थी, फिर भी वह जंगल जाता और छोट-छोटे शिकार करता।

एक दिन शाम के समय महेन्द्र एक मरा हुआ जानवर अपने थैले में डालकर जंगल से लौट रहा था। अचानक उस पर पीछे से एक तेंदूए ने हमला कर दिया। महेन्द्र के पास बंदूक थी, किन्तु तेंदुए ने हमला इस तरह एकाएक छुपकर किया था कि उसे गोली चलाने का अवसर ही न मिल सका। तेंदुए के आक्रमण से महेन्द्र जमीन पर जा गिरा। तेंदुए ने उस पर दूर से ही छलाँग लगाई थी, अतः वह भी अपने आप को न रोक सका और महेन्द्र के साथ ही जमीन पर गिरा। महेन्द्र से तीन-चार फीट की दूरी पर पड़ा तेंदुआ उठकर खड़ा हुआ और उस पर झपटा। महेन्द्र ने भय से आँखें बन्द कर ली। उसने समझ लिया कि अब उसका अन्तिम समय आ गया है। तभी अचानक 'छप' की आवाज हुई और एक अन्य जानवर न जाने कहाँ से आकर तेंदुए से भिड गया। महेन्द्र ने चौककर आँखें खोली। उसने जो कुछ भी देखा तो देखता ही रह गया। एक लम्बा-चौडा खुँखार जंगली कुत्ता तेदुए से लड़ रहा था। यह उसका अपना कुत्ता था, जो जंगल की ताजी हवा में रहकर काफर तन्दुरूस्त हो गया था। महेन्द्र कुछ पल यंत्रवत् सा दृश्य देखता रहा, उसकी घबराहट अभी गई नहीं थी। तभी उसे होश आया। उसके कुत्ते की जान खतरे में थीं उसने अपनी बंदूक उठायी और निशाना लेकर दो फायर तेंदुए पर किये। तेदुआ वही ढेर हो गया। महेन्द्र ने झपटकर कुत्ते को गोद में उठा लिया, लेकिन कुत्ता अन्तिम साँस ले रहा था। खुँखार तेंदुए ने उसका पूरा शरीर लहूलुहान कर दिया था। अपने मालिक की गोद में आकर कुत्ते की आँख में आँसू आ गये। उसने एक बार प्यार से अपने मालिक के हाथ पर जुबान फेरी और फिर सदा के लिए शांत हो गया।

कुत्ते की वफादारी देखकर पत्थर दिल महेन्द्र की आँखों में आँसू आ गये। वह वहीं फूट-फूट कर रोने लगा।

❖❖❖

लाफ्टर चेलेंज

सर जी! शारू जी! क्या गजब ढा रहे हो।
साबुन के विज्ञापन में बहुत नजर आ रहे हो।
हमको एक के सामने शरम आती है।
तुम तो चार-चार लड़कियों के सामने नंगे नहा रहे हो।।

: Jokes :

Rahul : Dad, we will become rich soon.
Dad : How ?
Rahul : Tomorrow, my teacher will teach me to convert paisa in to rupees.
Teacher : Tell me, why does a ball come down when we throw it?
Studenrt : Because, up, there is no one to catch it.
Mother : What are you doing?
Son : I am taking a bath.
Mother : But its too cold for that.
Son : Don't worr Mummy !! have my raincoat on.
ग्राहक : तुम्हारे इस मटर-पनीर में पनीर कहीं नजर नहीं आ रहा है ?
होटल वाला : साहब, गुलाब जामुन में अपने कभी गुलाब को देखा है।

❖❖❖

: टीचर जी :

आप क्यों देती है
इतना सारा स्कूल का काम
संडे की छुट्टी तो होती है
करने को आराम।
स्कूल के काम ने
किया हमें परेशान
पापा ने भी कैंसिल कर दिया
घूमने का प्रोग्राम।।
खाते-पीते, खेलते-कूदते
होमवर्क करो, होमवर्क करो
मम्मी हमको डाँटती रहती।
टीचर जी।
जब आप स्कल में पढ़ती थीं
क्या संडे के दिन भी
इतना सारा होमवर्क करती थी।।

Some Important tips to Safe traffic

1) Don't run on Jane.
2) Dont use coloured glassess in the vehicles
3) Don't play on the road.
4) Cross road at the Zebra crossing only.
5) Follow traffic rules.
6) Don't drink alcohol when you are driving.
7) Don't use Mobile phone when you are driving.
8) Be a licensed driver, keep your license whenever you drive.
9) Don't use harsh horne, it will affect the health of various people.
10) Whenever you are crossing the road look both sides of the road.

" By following these rules we can be safe."

Meaning of friendship

F- Farging
R - Real
I - Integrral
E- Emotional
N- Natural
D- Decent
S - Soft
H - Heartly
I - Importial
P - Pure

Priyanshi Yadav

Please Pay Attention

My dear friends, Please pay attenrtion,
I have a few things here to mention,
When you enter the school gate,
Be sure that you are never late,
Then say your prayer with a sincere heart,
This is how each day must start.
Listen to what your teacher say,
Increase your knowledge day by day,
You go to school with a good aim,
To be great and earn a good name.
If teacher scold you, never mind,
Though inside they are very kind,
This precious time you must utlize,
You'll be sorry otherwise.
Be obedient and bne smart,
Then you can pull lif's cart,
Those things are always of great benefit,
Keep in mind and test it.
Think you for your time,
and thanks for your attention

❖❖❖

चुटकुले

पति- तुम मेरी फिल्म में काम करोगी।....
पत्नी - हाँ करूँगी, क्या करना होगा ?
पति - कुछ नहीं बस नदी में जाकर खड़ी हो जाना ...
पत्नी - फिल्म का नाम क्या है?
पति - गई भैंस पानी में !!!

Name - Saloni
Class 3rd

हँसते रहो

जंगल में दो भाई रहते थे।
एक का नाम था, जो
दूसरे का नाम था, वो
एक रात 'जो' की बाथरूम में भूत दिखाई, दिया। 'जो' डर गया उसने 'वो' को आवाज लगायी। 'वो' दौड़ते हुए बाथरूप में आया भूत को जैसे ही देखा की उसका हार्ट फेल हो गया और 'वो' मर गया।
बस उसी दिन से कहावत हो गई।
'जो' डर गया।
'वो' मर गया।

काजल वर्मा
कक्षा -3

बेटी

घर की चहल-पहल है बेटी
जीवन में खिला कमल है बेटी।
कभी धूप भुनभुनी सुहानाए
कभी चंदा शीतल है बेटी।।
शिक्षा गुण संस्कार रोज दो,
फिर बेटों सी सबल है बेटी।।
सहारा दो गर विश्वास का,
तो पावन गंगा जल है बेटी।।
प्रकृति के सद्गुण सीचों
तो प्रकृति सी निश्चल है बेटी।।
क्यों डरते हो पैदा करने से
अरे आने वाला कल है बेटी।।

नाम - मानवी वर्मा
कक्षा - 6

माँ का दिल

कहानी

एक 16 साल के लड़के ने मम्मी से कहा की मुझे मेरे वे जन्मदिन पर क्या गिफ्ट दोगी तो उस लड़के की मम्मी ने उससे कहा कि जब तेरा 18 साल आएगा तो अलमारी के ऊपर देख लेना उसमें तेरा गिफ्ट होगा अभी बता दूँगी तो गिफ्ट का मजा नहीं आएगा। कुछ दिन बाद वो लड़का बीमार हो गया उसके मम्मी-पापा उसको अस्पताल लेकर गए जाँच के बाद डॉक्टर ने लड़के के माता-पिता से कहा कि इसके दिल में छेद है। ये अब दो महीने से ज्यादा नहीं जी पाएगा। साल भर बाद लड़का ठीक होकर आया तो उसे पता चला कि उसकी माँ नहीं रही उसे ये पता चलते ही उसने अलमारी खोली और उसने देखा की अलमारी में एक गिफ्ट पड़ा हुआ था उसने जल्दी से गिफ्ट खोला उस गिफ्ट में एक चिट्ठी थी उस चिट्ठी में लिखा तू बीमार हुआ था तब हम तुझे अस्पताल लेकर गए थे डॉक्टर ने कहा कि तेरे दिल में छेद है। तो उस दिन मैं बहुत रोई और फैसला किया।

Name Shristi Soni
Class - 6th

पहेलियाँ

1. हरी पूँछ लाल बिलाई इसका बनता हलुआ भाई। **- गाजर**
2. नीचे पटको ऊपर जाऊँ ऊपर से फिर नीचे आऊँ-आऊँ-जाऊँ सबको खेल खिलाऊँ। **-फुटबॉल**
3. नहला दिया धुला दिया मार-मार के सुला दिया। **- कपड़ा**
4. एक पहेली मैं बुझाऊँ सिर को काट नमक छिड़काऊँ। **- खीरा**
5. तेली का तेल कुम्हार का घड़ा हाथी सूंड राजा का डण्डा। **- दीपक**
6. मन्दिर में इसे शीश नवाये मगर राह में ठुकराये। **- पत्थर**
7. लाल-लाल आटा हरा पराठा जो भी खाता हाथ दिखलाता। **- मेंहदी**
8. एक चिड़िया ऐसी नदी के किनारे बैठी चुल्लू से पानी पीती अल्ला से बाल करती। **- लालटेन**

श्रेया सोनी
कक्षा-2

❖❖❖

G.K.

(1) कौन सा रंग शांति का प्रतीक है?
Ans सफेद रंग।
(2) कौन सा द्वीप भारत का हिस्सा है?
Ans अंडमान और निकोबार द्वीप और लक्षद्वीप भारत का हिस्सा है।
(3) सूर्य किस दिशा में आता है?
Ans पूर्व की दिशा में।
(4) माइक्रोसोफ्ट का संस्थापक कौन है?
Ans बिल गेट्स माइक्रोसोफ्ट के संस्थापक है।
(5) सोनी कंपनी किस देश की कंपनी है?
Ans सोनी जापान राष्ट्र की कंपनी है?
(6) जड़ वाली सब्जियों के नाम ?
Ans चूकंदर गाजर और मूली

Name - Shistri Agarwal
Class - VII th

पहेलियाँ

(1) दुनिया का सबसे तेज उगाने वाला पेड़ कौन सा है
Ans. बास का पेड़
(2) ऐसी कौन सी चीज है जो है तो सोने की लेकिन सोने से बहुत सस्ती है।
Ans. चारपाई
(3) ऐसा एक अजब खजाना जिसका मालिक बड़ा सयाना दोनों हाथों से लुटाता फिर भी दौलत वह बदलती जाय
Ans. ज्ञान (विद्या)

Name Shristi Agarwal
Class VIIIth

Puzzle

1. महेश अपने आगे बैठी हुई महिला को बताता है कि वह मेरी पत्नी के पति की माँ की बेटी है, तो बताइए कि उस महिता और महेश का आपस में क्या रिश्ता है? **उत्तर - भाई-बहन**

2. ऐसी क्या है, जिसे हम निगले तो जिंदा रह पाए, लेकिन अगर वो हमें निगले तो हम जीवित नहीं रह पाएंगें?

उत्तर - पानी

3. वह कौन है जो अपना घर बिना ईट, मिट्टी, सिमेंट और पानी के बनाता है। उत्तर - मकड़ी

4 नए जमाने का एक नया खिलौना है। जिसे हर कोई इसको लेना चाहता है। क्योंकि इससे घर बैठे ही देश दुनिया की सैर हो जाती है।

उत्तर - मोबाइल

चुटकुले

आँटी - बेटा क्या कर रहो हो आजकल ?

पप्पु - सांइटिस्ट हूँ आंटी जी।

आँटी - अरे वाह क्या करते हो?

पप्पु- बैठे-बैठे ऑक्सीजन को कार्बनडाई आक्साइड में चेंज करता हूँ।

टीचर - ये बताओं कि चार आदमी एक खेत को एक दिन में जोतते है तो तीन आदमी उस खेत को कितने दिन में जोतेंगे?

कपिल - सर, वे तीन आदमी फिर खेत जोतेगे ही नहीं।

टीचर - क्यों?

कपिल - अरे, वे दुखी होंगे कि चौथा आदमी कहाँ गया?

मेडिकल के स्टूडेटस को प्रोफेसर जोडो के दर्द के बारे में पढाने जाते हैं.....

प्रोफेसर - जोड़ो का दर्द क्या होता है?

स्टूडेंट - सर, ये सिर्फ जोड़े ही जानते हैं। कुंवारों को तो इसका जरा भी अंदाजा नहीं होता है।

चुटकुले

1) मच्छर का खून करने के इल्जाम में चींटी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस वाले चींटीं से पूछते हैं - 'तुमने रात को ऐसा क्या किया कि मच्छर मर गया?
चींटी बड़ी मासूमियत से कहती है, 'कुछ भी नहीं। मैं तो बस रात को मोटीन जलाकर सोई थी।'

2) संता (वंता से) : - बताओ स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है?
बंता (संता से) : - यही कि स्वर मुँह के बाहर निकलते हैं और व्यंजन अन्दर जाते हैं।

3) एक बार संता सिंह पिज्जा खाने रेस्टोरेन्ट में गए और एक पिज्जा आर्डर किया।
वेटर ने पूछा - सर पिज्जा के 6 पीस करू या 12 पीस?
सन्ता सिंह : - 6 पीस करना क्योंकि 12 पीस मैं खा नहीं पाऊँगा।

4) महिला (ऑटो चालक से) : - भैया, तेज चलाओ, मेरा चित्रहार निकल जाएगा।
ऑटो चालक (महिला से) : - बहन जी, अगर मैंने तेज चलाया तो आपके चित्र पर हार चढ़जाएगा।

5) ग्राहक (सेठ जी से) : - चार अण्डे देना।
दुकानदार : बेवकूफ, क्या तुमने मुझे मुर्गी समझ रखा है?

कविता

एक बैग है,खाने दो।
जेबें इसमें तीन सुनो।
लंच-बॉक्स, में है तैयार।
चार पूड़ियाँ, दही, अचार।
देखो जरा हमारे ठाठ।
स्केल, रबड़, पेंसिल आठ।
पुस्तक कॉपी नौ दस है,
चलो पकड़ते है अब बस।

चुटकुला

1) ''मुन्नी क्या तुम रात को सोने से पहले भगवान से प्रार्थना करती हो?
''मै नहीं करती। मम्मी करती है- मेरे विस्तर में लेटने के बाद, हर रात को कहती है- शुक्र है भगवान का ..... कि सो गई।''

2) ''वेटर मेरे लिए एक अण्डा लाओ, जो ज्यादा उबला न हो। टोस्ट लाओ, जो ज्यादा सिका न हो। चाय लाओ, जो ज्यादा स्ट्रॉग न हो और पराठा, जो ज्यादा तला न हो।''
''साहब! पानी कैसा लाऊँ? जो ज्यादा गीला न हो।''

3) टीचर : - बच्चो! मिल-जुल कर काम करना अच्छी बात है!
छात्रः - लेकिन सर! परीक्षा में तो आप ही हमें मिल-जुलकर काम करने से रोकते है!

4) पुलिस (चोर से) : - एक कदम भी आगे न बढ़ना वरना, ... वरना।
क्या कर लोगे? चोर से कहा!
पुलिस : - वरना मैं दो कदम पीछे हट जाऊँगा!

समरीन परवीन
कक्षा -3

झूका दे आसमाँ (कविता)

झुका दे आसमाँ तोड़ ले तारे।
सजा दे ये जमीं कहीं रहे न कोई कमी।
इस धरती पर रहना है तो शान से रहो।
जब तक तू है, धरती ही तेरा घर है।
जब जाये यहाँ से, तारे छोड़ जा यहीं।
तेरी याद करने वाले कहें, कोई आया था कहीं।
संसार को दे गया तारे, दिल रोशन कर गया।
जब तक रहा यहाँ, हँसाता रहा जहाँ को हमारे।
जब गया जहाँ से, रूला कर चला गया कहाँ।

ईषा वर्मा
कक्षा - 2

लघु कविता

'घबराहट'

घबराहट में
घुस गए एक घर में,
बुरी तरह हाँफ रहे थे,
मारे डर के काँप रहे थे,
तभी पूछा उस ग्रहणी ने -
कौन?
हम खड़े रहे मौन

ग्राहक - तुम्हारे इस मटर-पनीर में पनीर कहीं नजर नहीं आ रहा है।

होटल वाला- साहब, गुलाब जामुन में आपने कभी गुलाब को देखा है।

कविता डाकिया

घर-घर देता डाक डाकिया।
नाम है उसका अमित भाटिया।
दुःख की, सुख की, खबर है लाता।
हर एक के मन को यह भाता।।
कुछ न कुछ सबको दे जाता।।
आश उसकी टूट न जाए।
शालू उससे रूठ न जाए।।

अमीर आदमी

एक बार एक अमीर आदमी ने देखा कि एक गरीब फटेहाल बच्चा बड़ी उत्सुकतासे उसकी महंगी ऑडी कार को निहार रहा था। गरीब बच्चे पर तरस खाकर अमीर-आदमी ने उसे अपनी कार में बैठाकर घुमाने ले गया।

लड़के ने कहा - साहब आपकी कार तो बहुत अच्छी है, यह तो बहुत कीमती होगी न अमीर-आदमी ने गर्व से कहा : हाँ यह लाखों रूपए की है।

गरीब लड़का बोला : इसे खरीदने के लिए तो आपने बहुत मेहनत की होगी?

अमीर आदमी हँसकर बोला : यह कार मुझे मेरे भाई ने उपहार में दी है।

गरीब लड़के ने कुछ सोचते हुए कहाः वाह! आपके भाई कितने अच्छे हैं।

अमीर आदमी ने कहाः मुझे पता है कि तुम सोच रहे होंगे कि काश तुम्हारा भी कोई ऐसा भाई होता जो इतनी मँहगी कार तुम्हें गिफ्ट देता।

गरीब लड़के की आँखों में अनोखी चमक थी, उसने कहाः नहीं साहब, मैं तो आपके भाई की तरह बनना चाहता हूँ।

सार - अपनी सोच हमेशा ऊँची रखनी चाहिए, दूसरों की अपेक्षाओं से कहीं अधिक ऊँची, तो आपको बड़ा बनने से कोई रोक नहीं सकता।

माँ की ममता

एक बार कण्व मुनी के पास दो महिलाएं एक बच्चे के लिए झगड़ती हुई फैसला कराने के लिए आयी।

दोनों महिलाएं उस बच्चे को अपना बता रही थीं। उनके पीछे-पीछे अनेक ग्रामीण भी थे।

कव्व मुनि सोच में पड़ गए कि उनका फैसला वे किस तरह से करें।

आखिर उन्हें एक युक्ति सुझी। उन्होंने जमीन पर एक रेखा खींच कर बच्चे को उस पर लिटा दिया।

फिर वह दोनों महिलाओं को संबोधित करते हुए बोले, 'तुम दोनों रेखा के इधर-उधर खड़ी हो जाओं और बच्चे को पकड़ लो। जो बच्चे को अपनी तरफ खींच ले जाएगी, वहीं बच्चे की असली माँ होगी।

एक महिला ने बच्चे के पैर पकड़ लिए और दूसरी ने बच्चे के हाथ। फिर दोनों उस बच्चे को अपनी-अपनी तरफ खींचने लगी।

दर्द के मारे बच्चा जोर-जोर से रोने लगा।

तभी एक ने अपनी पकड़ ढीली करके बच्चे को छोड़ दिया और मुंह ढांपकर रोने लगी।

दूसरी औरत जीत की खुशी में झूम उठी और कहने लगी, '' मैंने बच्चे को अपनी ओर खींच लिया है, इसलिए यह बच्चा मेरा है।

अब कण्व मुनि के लिए निर्णायक घड़ी आ गयी थी।

उन्होंने फैसला दिया कि 'यह बच्चा तुम्हारा नहीं है बल्कि उसका है।'

सब लोग हतप्रद से कण्व मुनि को देखते रह गए। उनकी समझ में आ रहा था कि उन्होंने यह फैसला किस आधार पर दिया है।

कण्व मुनि ने कहा - 'जिस महिला ने बच्चा छोड़ा है वहीं असली माँ है। क्योंकि उससे अपने बच्चे का दर्द देखा नहीं गया। फिर बच्चा उसी महिला के हवाले कर दिया।'

❖❖❖

संगीतमय गधा

उद्धत एक धोबी का गधा था, वह दिन में धोबी के कपड़े ढोता था और रात में धोबी उसे खेत में चरने के लिए छोड़ देता था। लेकिन गधा चरने के बजाय पास के खेत में घुस गया और सब्जियाँ खाने लगा। जल्द ही गधे की दोस्ती एक सियार से हो गयी जो किसान की मुर्गियाँ खाने वहाँ आता था। एक रात गधा ने गाना गाने का फैसला किया, वह रात पूर्णिमा की थी। सियार ने उसे चेतावनी दी कि इससे किसान जाग-जायेगा लेकिन गधे ने सियार की बातों पर ध्यान नहीं दिया, और सियार के जाने के बाद गाना गाना उसने शुरू कर दिया। किसान गधे का गाना सुनकर उठ गया और उसे पीटने लगा फिर उसके गले में ओखली बाँध कर उसे भगा दिया।

नन्हीं पहेलियाँ

(1) हरा आटा - लाल पराग।
(2) आदि कटे तो नाम बने, मध्य कटे तो आम,अन्त कटे तो यंत्र।
(3) आटे जैसी गीली हलुए जैसे मीठी। जो कोई अर्थ बता दे, उसको दे दूँ अँगूठी।
(4) मैं हूँ पढ़े लिखे की नानी, पीली रंग बिरंगा पानी। मेरा पेट पचाये रहता, जाने कितने काव्य कहानी।।
(5) तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
(6) मारा न खून किया, बीसों का सिर काट लिया।
(7) जिसने पहला उसने देखा नहीं, जिसने देखा उसने पहना नहीं।
(8) गाय चलती जाय दूध गिराती जाय।
(9) पाँच अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
(10) आँखे है पर अंधी है, पैर है पर लगड़ी है। हाथ है पर लूली है, बताओ वह क्या है?
(11) चार ड्राइबर एक सवारी, उसके पीछे जनता मारी।
(12) हमने देखा ऐसा बंदर, जो उछले पानी के अंदर।
(13) चार पैर चार जगह, फल गिर एक जगह।
(14) मारने में छड़ी, खाने में मिठाई, ये पहेली मेरी मम्मी ने बनाई।
(15) रोज सबेरे खाने वाले, मिठाई है, पर देख न पाते।
(16) मैं छोटा हूँ एक फकीर, मेरे पेट में एक लकीर।

उत्तर - (1) मेंहदी (2) आराम (3) किसमिस (4) रबड़ (5) जहाज (6) नाखून (7) कफन (8) चक्की (9) मलयालम (10) गुड़िया (11) मुर्दा (12) मेढक (13) गाय का थन (14) गन्ना (15) हवा (16) गेहूँ।

❖❖❖

भूरा कुत्ता (कविता)

भूरा कुत्ता भाग आया।
नदी किनारे पैसा पाया।
कोट खरीदा ढीला डाला।
पैजामा नीले रंग वाला।।
छड़ी घुमाता पान चबाता।
अपने बूट को चमकाता।
सब कुत्तों पर रौब जमाता।
कुत्ते ने क्या ठाठ बनाया।।

बालक की ईमानदारी (कहानी)

एक बार एक छोटा लडका अपने पड़ोसी के घर गया। पड़ोसी के घर पर उस समय काई नहीं था। लड़के ने देखा एक डलिया में बड़े सुन्दर-सुन्दर सेब रखे थे। लेकिन उसने उन सेवों को हाथों से भी छूना ठीक नहीं समझा। पड़ोसी जब लौटकर आया तो उसने देखा कि सेब जैसे के तैसे रखे हैं। उसने लड़के से पूछा- ''तुम्हें सेब अच्छे नही लगते क्या? ''

लड़के ने कहा - ''मुझे बहुत अच्छे लगते है। ''

पड़ोसी बोला - ''तुमने इसे क्यों नहीं चुराया? यहाँ कोई देखने वाला तो था नहीं।''

लड़का बोला - ''कोई देखने वाला हो या नहीं, मैं तो देखने वाला था ही और मैं अपने को कोई बेईमानी का काम करते हुए नही देखना चाहता।''

वह पड़ोसी लड़के के उत्तर से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने लड़के को वह टोकरी उठाकर दे दी और कहा - ''तुम बहुत अच्छे लड़के हो। तुम्हें इतना और जान लेना चाहिए कि ईश्वर अच्छे-बुरे कर्मों को देखते रहते हैं।''

बुआ आखिर बुआ होती है.....

पापा की बहन होती है बुआ, दादी की बेटी होती है बुआ
दादा की लाडली होती है बुआ, हमारी बेस्ट फ्रेंड होती है बुआ
घर की रौनक होती है बुआ, पापा का मान होती है बुआ
त्यौहारों की रौनक होती है बुआ, बर्थडे पार्टी की शान होती है बुआ
माँ का अभिमान होती है बुआ, हमारी ढाल होती है बुआ
खुशियों की थाल होती है बुआ, कलाई का धागा होती है बुआ
रसमलाई का एहसास होती है बुआ, रसगुल्ले लाती है बुआ
राखी का इंतजार होती है बुआ, भाईदूज का त्योहार होती है बुआ
वेकेशन का फन होती है बुआ,
बड़ी बहन का एहसास होती है बुआ इसलिए तो .....

सबसे प्यारी होती है बुआ ....

A Small Story will change your life .....

A boy and girl were playing together. The boy had a collection of marbles. The girl had some sweets with her.

The boy told the girl that he will give her all his marbles in exchange of her sweets. The girl agreed.

The boy kept the biggest and the most beautiful marble aside & gave the rest to the girl. The girl gave him all her sweets as she had promised.

The night, the girl slept peacefull. But the boy couldn't sleep as he kept wondering if thet girl had hidden some sweets from him the way he had hidden his best marble.

Moral of the story :
If you don't give hundred percent in relationship, you'll always keep doubting in any relationship.

So give your hundred percent.

❖❖❖

चुटकुला

टीचर : पप्पू तुमने होमवर्क क्यो नहीं किया?
पप्पू : मैम लाईट नही थी।
टीचर : तो मोमबत्ती जला लेते।
पप्पू : मैम माचिस पूजा वाले कमरे में थी।
टीचर : तो जलाई क्यों नहीं?
पप्पू : मैम मैं नहाया नहीं था।
टीचर : तो क्यों नहीं नहाए?
पप्पू : मैम लाईट नहीं थी,तो मोटर नहीं चल रहा था।
टीचर : तो होमवर्क क्यों नहीं किया?
पप्पू : मैम लाईट नही थी।
टीचर : आँए?

Araya Soni
Class - 3rd

MOYE MOYE

देशीय एकता दिवस - कविता

अनेकता में एकता
महान है अपनी वीरता

त्योहार है अनेक
फिर भी सब है एक
सब धर्म के चिह्न है नेक ।।

जीवन कितना सुंदर है
पर सबसे कितना अंतर है

दिवाली, क्रिस्मस,ईद
अलग है सबकी रीत,
पर सबका है - राष्ट्रीय रीत
पर सबका है - राष्ट्रीय गीत

हम सब है इस जीवन के राही
अलग रंग की है अपनी स्याही

पाँचों उंगलियाँ एक समान
हर भारतीय अपना मेहमान

लक्ष्य अब तो यही है
करना सब कुछ सही है

यही तो अब हमें रहना है
जय हिन्द अब तो कहना है।।

Journey of Life

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,
अंदर मेरे ये कैसा शोर है,
हंसा मुझ पर फिर बोला,
चाहतें तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है,
रूह को संभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,
खुला आसमान,चाँद, तारे चाहत है तेरी,
पर बन्द दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है,
सपने देखना है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है .....

चुटकुला

मेरी जेब से रोजाना
रू 100 गायब हो जाते थे!

कुछ दिन बाद रू 400 गायब हो गए!
मैंने पत्नी को बुलाया और कहा,
''रोज रू 100 गायब होते थे, पर
आज रू 400 गायब है! ''
पत्नी बोली, ''मैं क्या करूँ? जैसा मोदी
जी ने कहा है, मैं बिल्कुल वैसा ही कर रही
हूँ।''
मैं तुरंत बोला, ''क्या कहा मोदी जी ने?''

पत्नी बोलीः ''मोदी जी ने कहा, अब की
बार 400 पार !! ''

मजेदार चुटकुले

❖ स्कूल में आग लग गई, सब बच्चे खुश थे कि अब स्कूल नहीं जाना पड़ेगा।
एक बच्चा उदास था
अध्यापक छात्र से - बेटा तुम उदास क्यों हो।
छात्र - सर आप जिंदा कैसे बच गए।

❖ टीचर - इतने दिन कहाँ थे
रमेश - बर्ल्ड फ्लू हो गया था
टीचर - पर यह तो बर्ड में होता है ..
इंसानो में नहीं
रमेश (गुस्से में) - इंसान समझा ही कहां है आपने,
रोज तो मुर्गा बना देते हो .....

❖ एक बच्चा गायब हो गया,
किसी ने उसका फोटो Whatsapp पर डाल दिया
कि बच्चे को ढूढ़ने के लिए फोटो फॉरबर्ड करें।
शाम को बच्चा वापस आ गया
लेकिन आज एक साल हो गया। और
उसका फोटो अब भी फॉरवर्ड हो रहा है।
बच्चा जहाँ भी जाता है!
लोग उसे पकड़कर उसके घर छोड़ आते हैं।

❖ हिंदी क्लास में टीचर बच्चों से,
टीचर - बच्चों, एक ऐसा वाक्य बनाओं जिसमें 'कबूतर' आए
पप्पू तपाक से हाथ उठाकर बोला,
रात की पी हुई, 'कब' 'उतर' जाती है पता ही नहीं चलता।

❖ टीचर - कल जिसने ये पाठ नहीं सुनाया, उसकी खैर नहीं
चिंटू - ठीक है, कल का कल देखेंगे
अगले दिन -
टीचर - जिसने पाठ याद नहीं किया वो 'मुर्गा बन जाए'
चिंटू - सर सूखा या तरी वाला?

❖ टीचर - संजू यमुना नदी कहाँ बहती है?
संजू - जमीन पर
टीचर - नक्शे में बताओं कहाँ बहती है?
संजू - नक्शे में कैसे वह सकती है? नक्शा गल जाएगा।

❖ आधी रात को गली में शोर-शराबा सुनकर पति की आँख खुल गई उसने घर के बाहर निकलकर लोगों से पूछा .....

❖ टीचर - एक तरफ पैसा, दूसरी तरफ अक्ल, क्या चुनोगे।
विद्यार्थी - पैसा
टीचर - गलत, मैं अक्ल चुनती
विद्यार्थी - आप सही कह रही हो मैडम, जिसके पास जिस चीज की कमी होती है वो वही चुनता है।

❖ दादा (पोते से) - तेरी टीचर आ रही है, जा छिप जा।
पोता - पहले आप छिप जाओ, आपकी मौत के बहाने मैंने दो हफ्ते की छुट्टी ले रखी है।

❖ लड़की के बाप ने लड़के से पूछा - अक्ल बड़ी या भैंस
लड़के ने बहुत देर सोचा और जवाब दिया
तुमने मुझे पागल समझा है।
Date of Birth तो बताया नहीं।

पेड़

धरती बोले पेड़ लगाओ पेड़ लगाओ,
संसार को सुंदर बनाओ।
मनुष्य पेड़ काट रहा है।
धरती को सुना बना रहा है।
पेड़ धरती की शान है,
जीवन की मुस्कान है।
छाया ये हमको देते हैं,
फल भी इनपर भरपूर होते हैं।
एक एक यदि हम पेड़ लगाएं,
तो हम एक बगीया बनाएं।
आओ मिलकर कसम खाएँ,
अपनी धरती हरी बनाएँ।

मैं बोझ नहीं हूँ

शाम हो गई अभी तो घूमने चलो न पापा
चलते-चलते थक गई कंधे पर बिठा लो न पापा
अंधेरे से डर लगता सीने से लगा लो न पापा
मम्मा तो सो गई
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा
स्कूल तो पूरी हो गई
अब क्लास जाने दो न पापा
पाल-पोस कर बड़ा किया
अब जुदा तो मत करो न पापा
अब डोली में बिठा ही दिया तो
आँसू तो मत बहाओ न पापा
आप की मुस्कराहट अच्छी है
एक बार मुस्काराओ न पापा
आप ने मेरी हर बात न मानी
एक बात और मान जाओ न पापा
इस धरती पर बोझ नहीं मैं
दुनिया को समझाओ न पापा

कुछ खूबसूरत रिश्ते

कुछ रिश्ते सबसे अपने होते हैं
न माँगते है कुछ
न अहसान जताते हैं
बस दुआओ से झोली भर जाते हैं-
कुछ रिश्ते बहुत खरे होते हैं
क्या दिया क्या लिया
कोई नाप-तोल नहीं
चाहे प्यार हो नाराजगी
फिर भी हर हाल में निभाते हैं -
कुछ रिश्ते इतने खामोश होते हैं कि
शोर नहीं मचाते अपने होने का पर
जब दुःख की घड़ी हो
बिना कहे दर्द बाँट, जीने का हौसला देते हैं
कुछ रिश्ते इतना बडप्पन लिये होते हैं
चाहे कितना भी ऊँचा हो खुद का रूनबा
सामने वाले को कभी
छोटा महसूस नही कराते हैं-
कुछ रिश्ते कहने को वो बड़े गैर से होते हैं
पर अजनबीपन हम उसमें ढूंढ़ नहीं पाते हैं
वो अपनो से ज्यादा प्यार लुटाते हैं-
कुछ रिश्ते साथ में कहीं नजर नही आते हैं,
पर इतने रूहानी होते
कि ताउम्र रूह में बसते हैं,
साँसों को जीवन देते हैं - कुछ रिश्ते -

शिवेश
यू.के.जी.

उँगलियाँ

उँगलियाँ खुरदुरी हो जाती हैं
लुहार की, कुम्हार की,सुनार की,
सितार बजाने वाले संगीतकार की

तवे पर रोटियाँ पलटने वाले रसोईदार की,
खेतों में काम करने वाले बनिहार की,
बिखरा हुआ घर समेटने वाले जिम्मेदार की
उँगलियाँ खुरदुरी हो जाती है

अक्सर कुछ बनाने की कोशिश में
कुछ बिगड़ भी जाता है।

जल ही जीवन है

जल ही जीवन है जल सा जीवन, जल्दी ही जल जाएंगे,
अगर न बची जल की बूँदे, कैसे प्यास बुझायेंगे।
धरती पर सबसे बहुमूल्य रत्न जल है,
जो प्रकृति के द्वारा मानवता के लिए अनमोल उपहार है।

जल की एक बूँद को बरबाद न करें
सुधारे गलती व अपनी भूल
हम सुधरे या न सुधरे समाज
तो प्यासे ही गँवाएगे अपनी जान।

❖❖❖

खुशी - एक भावना

- खुशी वह है जिसे शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है
- केवल महसूस किया जा सकता है।
- आपको हमेशा खुद के अच्छे समय और सभी अच्छी चीजों के बारे में याद दिलानी चाहिए।
- यह आपके मूड को नकारात्मक से सकारात्मक अवस्था तक स्थानांतरिक करने का एक अच्छा तरीका है।
- हमें यह समझाने की जरूरत है कि खुशी मूलतः मन की अवस्था है।
- अरस्तू के अनुसार सुखी जीवन को शारीरिक और मानसिक रूप से फिट होने जैसी कई स्थितियों की पूर्ति की जरूरत है।
- कुछ का मानना था कि खुशी पीड़ा के मुख्य कारणों को समझने से शुरू होती है।
- यह सभी व्यक्ति के भावनात्मक कल्याण के लिए आवश्यक है।
- खुशी की परिभाषा और पाने के प्रयास परिस्थितियों के अनुसार अलग होते हैं।

माँ

माँ वह है जो हमें जन्म देती है यही कारण है कि संसार में हर जीवनदायी वस्तु को माँ की संज्ञा दी गई है यदि हमारे जीवन के शुरूआती समय में कोई हमारे सुख-दुख में हमारा साथी होता है तो वह हमारी माँ ही होती है। माँ हमें कभी इस बात का अहसास नही होने देती कि संकट की घड़ी में हम अकेले हैं।

इस युग में लो रावण भी हो जाएं वहीं बहुत है।

रावण बनना भी कहाँ आसान था,
रावण में अहंकार था, तो पश्चाताप भी था
रावण में वासना थी तो संयम भी था
रावण में सीता के अपहरण की ताकत थी तो बिना सहमति
पर-स्त्री को स्पर्श भी न करने का संकल्प था

सीता जीवित मिली ये राम की ताकत थी
पर..
सीता पवित्र भी मिल, यह रावण की मर्यादा थी
राम तुम्हारे युग का रावण अच्छा था
दस के दस चेहरे सब बाहर रखता था।

एक फकीर की बेहतरीन बात

एक फकीर नदी के किनारे बैठा था किसी ने पूछा बाबा क्या कर रहे हो? फकीर ने कहा इंतजार कर रहा हूँ कि पूरी नदी बह जाए तो फिर पार करूँ। उस व्यक्ति ने कहा, कैसी बात कर रहे हो, बाबा पूरा जल बहने के इंतजार में तो तुम कभी नदी पार ही नहीं कर पाओगें फकीर ने कहा- यही तो मैं तुम लोगो को समझाना चाहता हूँ कि तुम लोग जो सदा यह कहते रहते हो कि एक बार जीवन की जिम्मेदारियाँ पूरी हो जाएँ तो मौज करूगाँ, घूमू फिरू, सबसे मिलूँ, सेवा करूँ, जैसे नदी का जल खत्म नहीं होगा हमको इस जल को कैसे ही पार जाने का रास्ता बनाना है इस प्रकार जीवन खत्म हो जाएगा, पर जीवन के काम कभी नहीं खत्म होंगे।

माही अग्रवाल

कद्दू की चली बारात

कद्दू जी की चली बारात
हुई बतासों की बरसात।
बैगन की गाड़ी पे बैठे
कद्दू राजा शलजम
और प्याज ने मिलकर
खुब बजाया बाजा।
नाच रहे थे आलू
मटर टमाटर भिन्डी मेथी।
पालक सोवा बने बरातीं करेले और कटहल।
हाथ में चाट का पत्ता
पकड़े खा रहे थे।
हँसते मुस्कुराते लौकी दुलहन
लाए साथ सबको याद रही यह रात।

मो0 वारीस
कक्षा -5

❖❖❖

चुटकुले

गोले - तांत्रिक बाबा, किसी सुंदर लड़की का हाथ पाने के लिए क्या करूँ?

तांत्रिक - किसी मॉल के बाहर मेंहदी लगाने का काम शुरू कर दे।,

गोलू- बेहोश ....!!

चिंटू - मम्मी, क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूँ?

मम्मी - ऐसा क्यों पूछ रहे हो बेटा?

चिंटू - क्यों कि मैं कहीं भी जाता हूँ तो सब यही कहते हैं कि हे भगवान ये फिर आ गया।

फनी जोक्स

- टीचर ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबंध लिखने को दिया
विषय था, आलस्य क्या है?
एक बच्चे ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पर बडे-बड़े अक्षरों में लिखा-
यही आलस्य है -
- टीचर ने पहली क्लास के बच्चें से कहा - कल तुम्हें जो अंग्रेजी का पढ़ाया था, उसे सुनाओ
बच्चा - मुझे नहीं आता मैम
टीचर - नहीं आता? अच्छा तो जो आता है वहीं सुना दो
बच्चा - जाने मेरी जानेमन, बचपन का प्यार मेरा भूल नहीं जाना रे।
- एक बार एक बच्चा साइकिल चला रहा होता है, साइकिल चलाते चलाते वह अपने पापा से कहता है देखा पापा देखा मैं आँख बंद करके साइकिल चल रहा हूँ फिर थोड़ी देर में वह बच्चा अपने दोनों हाथ साइकिल से हटा लेता है फिर अपने पापा से कहता है देखा पापा, देखा पापा मेरे दोनो हाथ नहीं है फिर अपने दोनों पैर पीछे कर लेता है, फिर कहता है देखा पापा देखा पापा मेरे पैर भी नहीं है।
फिर आगे जाकर दीवार से टकरा जाता है फिर कहता है, देखो पापा देखा मेरे दाँत भी नहीं हैं।
- हिंदी की टीचर ने पप्पू से पूछा
'साली आधी घर वाली' इस मुहावरे का अर्थ बताओ,
पप्पू- सर ये तो स्कीम है जो दूल्हे को - बताई तो जाती है, दी कभी नहीं जाती है।

राजा-रानी की कहानियाँ

बच्चों के लिए कहानी का जिक्र हो और राज-रानी की बात न हो, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। जैसे ही बच्चों का जमघट दादी-नानी के आसपास लगता है तो हर बच्चे की पहली फरमाइश राजा-रानी की कहानी ही होती है ये कहानियाँ आज से नहीं बल्कि सदियों से सुनी और सुनाई जा रही हैं इन राजा और रानी की कहानियों में कुछ सच्चे , अच्छे और नेक राजा मिलते हैं तो कुछ धोखा और विश्वासघात का किस्सा बयां करते हैं राजा-रानी के ऐसे कई किस्से हैं जो हमें सच्चाई की राह पर चलने, लोगों की सेवा करने और साहसी बनने की प्रेरणा देते हैं बस इसलिए हमने अपने कहानियों की श्रेणी में राजा-रानी की कहानियों को भी शामिल किया है ये कहानियाँ बच्चों को जरूर पसंद आएगी और तो उन्हें एक बार नहीं , बल्कि बार-बार सुनने और पढ़ने के लिए उत्साहित होगें इनमें से कुछ कहानियाँ सच्ची घटनाओं पर आधारित है, तो कुछ काल्पनिक दुनिया की सैर करवाती है, लेकिन हर कहानी अंत में बच्चों को एक सीख जरूर देती है फिर देर किस बात की, अभी खोलिए राजा-रानी की कहानियों का पिटारा और एक-एक करके बच्चों को सुनाएं।

❖❖❖

कहानी

एक बार एक किसान को घर के रास्ते में एक नेवला मिला उसने सोचा कि यह उसके छोटे बेटे के लिए अच्छा साथी होगा वह उसे अपने घर ले आया किसान का छोटा बेटा और नेवला जल्द ही अच्छे दोस्त बन गएं वे खूब खेलते थे हालाकि किसान की पत्नी को नेवले ज्यादा पसंद नहीं आएं एक दिन किसान की पत्नी केा बाजार जाना था उसने अपने पति से बच्चे की देखभाल करने को कहा किसान ने कहा- चिंता मत करो वह अपने बच्चे की देखभाल करेगा। फिर उसकी पत्नी चली गई जल्द ही किसान को एक साहूकार ने बुलाया साहूकार अपना पैसा वापस चाहता था किसान के पास अच्छी फसल थी और उसके पास भुगतान करने के लिए पैसा तैयार था।

बच्चा सो रहा था और इस तरह किसान बच्चे को अपने साथ नहीं ले जा पा रहा था इसलिए उसने बच्चे की देखभाल करने के लिए नेवले को छोड़ दिया कुछ देर बाद किसान की पत्नी फलों तथा सब्जियों की एक टोकरी लेकर वापस आई उसने नेवले को घर के बाहर इंतजार करते देखा उसने उसका चेहरा देखा और उसने पाया कि कुछ गडबड़ है उसने नेवले का चेहरा और पंजे देखे वे खून से भर गए उसने सोचा नेवले ने उसके बेटे को मार डाला वह उस पर चिल्लाई, ''अरे गंदे प्राणी, तुमने मेरे बेटे को मार डाला।'' वह रोई और नेवले के सिर पर टोकरी मारी वह दौड़कर अपने बेटे की ओर बढ़ी। लेकिन उसने देखा कि फर्श पर एक मरा हुआ साँप है, उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए वह समझ गई कि नेवले ने साँप को मार डाला और उसके बेटे की रक्षा की लेकिन उसे अहसास हुआ कि उसने क्या किया !!! वह दौड़कर वापस नेवले के पास गई आँखों में आँसू लिए उसने उससे भारी टोकरी उठा ली। वफादार नेवला मर चुका था।

शिक्षा - कुछ भी करने से पहले सोचना चाहिए।

चुटकुले

(1) एक बच्चे ने चिंटू से पूछा - क्या तुम चीनी भाषा पढ़सकते हो?
चिंटू - हाँ, अगर वो हिंदी या अंग्रेजी में लिखी ही तो

(2) प्लेट फार्म पर टीटी ने पप्पू से टिकट माँगा,
पप्पू - लेकिन मैं तो ट्रेन से आया ही नहीं
टीटी- अच्छा क्या सबूत है?
पप्पू - सबूत यह है कि मेरे पास टिकट ही नहीं है।

(3) पूजा के समय पत्नी ने पति से पूछा,
पत्नी- सुनो जी आपको आरती याद है न,
पति - हाँ, वो पतली सी, वही न
इसके बाद तो भगवान की बाद में, पति की पूजा पहले हो गई।

(4) चिंटू से एक आदमी ने पूछा - बेटा आपके पापा का क्या नाम है?
चिंटू - अंकल, अभी उनका नाम नहीं रखा मैंने।
बस प्यार से पापा ही कहता हूँ।

(5) देर रात चिंटू ने मिंटू के घर का दरवाजा खटखटाया
मिंटू कौन है?
चिंटू - मैं हूँ
मिंटू - मैं कौन
चिंटू - अरे पागल, तू मिंटू और कौन

(6) चिंटू - मम्मी मैं कल से स्कूल नहीं जाऊंगा
मम्मी - क्यो क्या हो गया?
चिंटू - मम्मी आज स्कूल में सभी बच्चों का वजन मापा गया था।
मम्मी - तो
चिंटू - मुझे डर है कि कहीं रेट अच्छा मिल गया तो स्कूल वाले हमें बेच ही न दे।

❖❖❖

Funny Jokes

भिखारी - कुछ खाने को दे दो।
लड़की - टमाटर खाओ
भिखारी - रोटी दे दो
लड़की - टमाटर खाओ
भिखारी - अच्छा लाओ टमाटर ही दे दो।
लड़की की माँ - अरे तुम जाओ बाबा - ये तोतली है - कह रही है कमाकर खाओ

❖❖❖

चटपटे चुटकुले

टीचर - चिंटू से परेशान थे,
टीचर - चिंटू अपने बैग से सारी किताबे निकालो
चिंटू - निकाल ली सर।
टीचर - ये वाली किताब किसकी है?
चिंटू - कागज की है सर,
टीचर - ये तो मुझे पता है कि कागज की है,
चिंटू- तो फिर क्यों पूछ रहे है?
टीचर - बेहोश है

अनिका राजपूत
यू0के0जी0

अनुशासन

1. अनुशासन एक क्रिया है जो हमारे शरीर, दिमाग और आत्मा को नियंत्रित करके नियमों का पालन करना सिखाता है।
2 समय का पाबंद, बड़ो का सम्मान, नियमित दिनचर्या व बुरी आदतों से दूर रहना अनुशासन कहलाता है।
3. अनुशासन के पालन से व्यक्ति का जीवन सफल और सार्थक बनता है।
4 अनुशासन हमारे बेहतर चरित्र का निर्माण करता है।
5 अनुशासन का न होना हमें और गैर जिम्मेदार और आलसी बना देता है।
6. अनुशासन का दृढ़तापूर्वक पालन हमें समय का पाबंद बनाता है।
7 अुनशासन हमें अच्छाई और बुराई में फर्क दिखाता है।
8 एक अनुशासित व्यक्ति अपने से बड़ो के आदेश का पालन पूरी निष्ठा भाव और ईमानदारी से करता है।
9. अनुशासन हमारे जीवन में आत्मविश्वास और आत्म-नियंत्रण विकसित करने मे सहायता करता है।
10. अनुशासन के नीति नियम को प्रत्येक व्यक्ति को अपने लिए निर्धारित करना चाहिए।

How to Succeed in Life

Talk Softy
Eat Semsibly
Breath - Deeply
Sleep - Sufficiently
Dress - Smartly
Act - Fearlessly
Work - Patiently
Think - Creatively
Behave - Decently
Earn - Honestly
Save -- Regularly
Send - Intelling

Earth Day

Earth day is always on April 22nd It takes place every year in almost 200 + countries. Earth day is one of the largest holiday of the year.

Earth day is about peace and about respecting our world. Many people do no entire. Earth week, because this is so important. It is also close to Arbar day. When you plant trees on the last friday in April.

On Earth day, you might clean up your neighbourhood. May be you ride a bike or take a bus instead of taking a car. You can take a shorter shower to save water. You could recycle instead of throwing things into the trash.How else can You help the world?

Three Simple Rules in Life

1. If you don't go after what you want, you'll never have it.
2. If you don't ask the answer is always no.
3. If you don't step forward you're alway in the san,

❖❖❖

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए
माता-पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रहा न दूर मैं जिससे
वह मेरा पदप्रदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत, कभी है धीर
स्वभााव में सदा गंभीर
मन में दबी रहे ये इच्छा
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

रुद्राक्ष रावत
कक्षा 3

कहानियाँ

चालाक बंदर

किसी नदी के किनारे एक बहुत बड़ा पेड़ था उस पर एक बंदर रहता था उस पेड़ पर बड़े मीठे फल लगते थे। बंदर उन्हें भरपेट खाता और मौज उड़ाता वह अकेले ही मजे में दिन गुजार रहा था।

एक दिन एक मगर उस नदी में से पेड़ के नीचे आया। बंदर के पूछने पर मगर ने बताया कि वह वहाँ खाने की तलाश में आया है इस पर बंदर ने पेड़ से तोड़कर बहुत से मीठे फल मगर को खाने के लिए दिए इस तरह बंदर और मगर में दोस्ती हो गई अब मगर हर रोज वहाँ आता और दोनों मिलकर खूब फल खाते बंदर भी एक दोस्त पाकर बहुत खुश था।

एक दिन बात-बात में मगर ने बंदर को बताया की उसकी एक पत्नी है जो नदी के उस पार उनके घर में रहती है तब बंदर ने उस दिन बहुत से मीठे फल मगर को उसकी पत्नी के लिए साथ ले जाने के लिए दिए।

इस तरह मगर रोज जी भरकर फल खाता और अपनी पत्नी के लिए भी ले जाता मगर की पत्नी को फल खाना तो अच्छा लगता पर पति का देर से घर लौटना पसंद नहीं था एक दिन मगर की पत्नी ने मगर से कहा, अगर वह बंदर रोज रोज इतने मीठे फल खाता है तो उसका कलेजा कितना मीठा होगा मैं उसका कलेजा खाऊँगी मगर ने उसे बहुत समझाया पर वह नहीं मानी।

मगरमच्छ दावत के बहाने बंदर को अपनी पीठ पर बैठाकर अपने घर लाने नदी बीच में उसने बंदर को अपनी पत्नी की कलेजे वाली बात बता दी इस पर बंदर ने कहा कि वो तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आया है वह उसे हिफाजत से पेड़ पर रखता है इसलिए उन्हें वापिस जाकर कलेजा लाना पड़ेगा। मगर बंदर को वापिस पेड़ के पास ले गयां बंदर छलांग मारकर पेड़ पर चढ़गया उसने हँसकर कहा कि - जाओ मूर्ख- राजा, घर जाओ और अपनी पत्नी से कहना कि तुम दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हो भला कोई भी अपना कलेजा निकालकर अलग रख सकता है। बंदर की इस समझदारी से हमें पता चलता है कि मुसीबत के वक्त हमें कभी धैर्य नहीं खोना चाहिए।

❖❖❖

तेनाली राम की कहानियाँ

भारत में ऐसे कई महान ज्ञानी हुए हैं जिनकी बुद्धिमता का लोहा हर किसी ने माना है उनके व्यक्तित्व व चतुराई से जुड़े किस्से हर किसी को प्रभावित व रोमांचित करते हैं।भारत के इतिहास में ऐसे ही शख्य हुए है, जिनका नाम है -तेनालीराम। तेनालीराम की बुद्धिमानी से भला कौन परिचित नहीं है तेनालीराम की जीवनी विजयनगर से ही शुरू होती है जहाँ वह महाराज कृष्णदेव राय के सबसे प्रिय मंत्री हुआ करते थे वह उन्हें हर उलझन से निकालने में मदद करने थे तेनालीराम के किस्से तब भी प्रसिद्ध थे और आज भी है। बच्चे के मानसिक विकास के लिए तेनालीराम की कहानियों को हमारा अच्छा जरिया माना गया है राज्य पर किसी तरह की आपत्ति आने पर महाराज तेनाली राम से ही सलाह लिया करते थे यही नहीं तेनाली राम से जुड़े ऐसे कई चुटकिले किस्से है जो न सिर्फ हर किसी को गुदगुदाते है बल्कि हँसी-हँसी में एक सीख भी दे जाते हैं कहानियों के इस वर्ग में आपको तेंनालीराम से जुड़े कई मजेदार किस्से पढ़ने को मिलेगे,जो प्रमाण है इस बात का कि चतुराई और बौद्धिक कौशल के जरिए किसी भी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

❖❖❖

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी
खुशियाँ साथ लाती है बेटी
ईश्वर की सौगात है बेटी
सुबह की पहली किरण है बेटी
तारों की शीतल छाया है बैटी
आँगन की चिड़िया है बेटी
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी
नये-नये रिश्ते बनाती है बेटी
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी
बार-बार याद आती है बेटी
बेटी की कीमत उनसे पूछो
जिनके पास नहीं है बेटी

Why sometimes prayers are not answered

One day I prayed asking something from God but my prayer was not answered. I cried the whole day and night and at last went to sleep in my dream. I saw God standing infront of me. Seeing God I wakeup and asked him why he had not answered my prayer. I prayed hard with all sincerely and devotion. God answered that his answer and was no. The thing you want, you will never have it before time and more than that of your density.

Everyday has to pray for his or her son family. If I will not give you pain and grief, then how will you remember me enjoy small happy moment.

Have faith on me and try to help yourself because, I help those who help themselves.

Zikra
Class 5th

: कविता :

नहीं सूर्य से कहता कोई, धूप यहाँ मत फैलाओ।

कोई नहीं चाद से कहता, उठा चाँदनी को ले जाओ।।

कोई नहीं हवा से कहता, खबरदार जो अन्दर आयी।

बादल से कहता कब कोई, क्यों जलधार यहाँ बरसाई।।

दोस्ती

दोस्ती है एक फूलों का हार, दोस्ती कर सकता है सारा संसार।

कुछ तो दोस्ती करके जाते हैं भूल, समझते इसे रास्ते की धूल।।

दोस्ती करना मुश्किल तो नहीं, दोस्ती करके निभाना कठिन है।

प्रेम भावना रखना चाहिए, एक दूसरे से सभी को।।

तभी आप स्वर्ग बना सकते हैं जमीं को।

दोस्ती करो तो आती है बहार, एक बार दोस्ती करके देखो तो यार।।

वैज्ञानिक आविष्कार

पैदल चलकर जब हुए विफल। 'मैकमिलन' ने 'साइकिल' बनाई।।

पर दूर हुई न कठिनाई। 'स्टीफन' ने रेल बनायी।

राइट ने 'विमान' बनाया। 'कोलाटन' भी क्यों पीछे रहता।।

उसने भी 'जलयान' बनाया। थका सा मानव बैठा मौन।।

लाए 'वर नाईट' ग्रामोफोन। ग्रामोफोन ले आए 'एडिसन'।।

सुनने को नित नए-नए गान। करने को सबका मनोरंजन।।

दिया 'मारकोनी' ने 'रेडियो' दान। बेल ने 'टेलीफोन' बनाया।।

घर बैठे वार्तालाप कराया। करके नित नए अनुसंधान।।

कर ले तू जन का कल्याण, भूलेगा तुझे कैसे इंसान।।

शिक्षण -शास्त्रीय मुद्दे

गणित की प्रकृति

गणित का अर्थ :

मार्शल -एच स्टोन के अनुसार -

"गणित एक ऐसी अभूर्त व्यवस्था का अध्ययन है जो कि अभूर्त तत्वों से मिलकर बनी है। इन तत्वों को भूर्त रूप में परिभाषित किया गया है।

बटैण्ड रसैल के अनुसार -

"गणित एक ऐसा विषय है जिसमें हम यह भी नहीं जानते कि हम किसके बारे में कर रहे हैं, और न हीं यह जान पाते हैं कि जो कह रहे हैं, वह सत्य है।"

व्हाइट हैण्ड के अनुसार -

" व्यापक महत्व की दृष्टि स गणित सभी प्रकार की औपचारिक निम्नात्मक तार्किक योग्यता का विकास है।"

गणित सम्बिन्धित अवधारणाएं -

(1) गणित गणनाओं का विज्ञान है।

(2) गणित स्थान तथा संख्याओं का विज्ञान है।

(3) गणित माप-तौल (मापन), मात्रा (परिमाण) तथा दिशा का विज्ञान है।

(4) इसमें मात्रात्मक तथ्यों और सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है।

(5) यह आगमनात्मक तथा प्रयोगिक विज्ञान है।

❖❖❖

हँसों और हँसाओ

कालेज में एक बड़ी उम्र की लड़की ने दाखिला लिया तो सारे लडके-लड़कियों ने उसे बुआ कहना शुरू कर दिया। कुछ दिनों तक तो उस बेचारी ने सहन किया।अन्त में उसने तंग आकर प्रिन्सिपल से शिकायत की। प्रिन्सिपल को बड़ा क्रोध आया तो क्लास-रूम में पहुँचे और बोले, 'जो भी इसे बुआ कहता है वह तुरन्त खड़ा हो जाये।' एक-एक करके सारी क्लास खड़ी हो गयी। केवल एक लड़का बैठा रहा। प्रिन्सिपल ने बड़ी हैरानी के साथ उस लडके से पूछा, 'क्यों भाई! तुम इसे बुआ नहीं कहते?'लड़के ने ठंडी सांस भरकर कहा- 'सर! मैं सारी क्लास का फूफा हूँ।'

हिन्दी भाषा

प्रकृति की पहली ध्वनि ऊँ है।
मेरी हिन्दी भाषा भी इसी ऊँ की देन है।
देवनागरी लिपि है इसकी, देवो की कलम से उपजी
बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, डांगरी, पंजाबी और कई हिन्दी
ही इन सबकी जननी।

प्रकृति की हर एक चीज अपने में संपूर्ण है।
मेरी हिंदी भाषा भी अपने में संपूर्ण है।
जो बोलते है वही लिखते है,
मन के भाव सही उभरते हैं।

हिंदी भाषा ही तुम्हें, प्रकृति के समीप ले जाएगी,
मन की शुद्धि, तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगा।

कुछ हवा चली है ऐसी यहाँ
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो।
बदल सको क्या तुम अपनी माता को?
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो।

देवो की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो।
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो
हर एक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो
हिंद की जड़ो पर आओ हम गर्व करें
हिंदी भाषा पर आओ हम गर्व करें।

अनमोल वचन

1. गुरू वही श्रेष्ठ होता है जिसकी
प्रेरणा से किसी का चरित्र
बदल जाये और मित्र वही श्रेष्ठ
होता है जिसकी संगत से
रंगत बदल जाये!!

2. खूबसूरत सा एक पल ....
किस्सा बन जाता है .....
जाने कब, कौन जिंदगी का ...
हिस्सा बन जाता है ....
कुछ लोग जिंदगी में .
ऐसे मिलते हैं जिनसे ....
कभी भी ना टूटने वाला ....
रिश्ता बन जाता है ....।

3. ढल जाती है हर चीज
अपने वक्त पर
बस एक व्यवहार और
लगाव ही है
जो कभी बूढ़ा नहीं होता

शेर का थप्पड़

एक ब्राह्मण देवता थें। बड़े गरीब और सीधे थे। देश में अकाल पड़ा। अब भला ब्राह्मण को कौन सीधा दे और कौन उनसे पूजा-पाठ कराये। बेचारे ब्राह्मण को कई दिन तक भोजन नहीं मिला।

ब्राह्मण ने सोचा - ''भूख से मरने से तो प्राण दे देना ठीक है।' वे जंगल में मरने के विचार से गये। मरने के पहले उन्होंने शुद्ध हृदय से भगवान् का नाम लिया और प्रार्थना की। इतने में एक शेर दिखाई पड़ा ब्राह्मण ने कहा - 'मैं मरने आया ही था। यह मुझे खा ले तो अच्छा।'

शेर ने पास आकर पूछा -' तू डरता क्यो नहीं?'

ब्राह्मण ने सब बातें बताकर कहा - 'अब तुम मुझे झटपट मार कर खा डालो।'सच्ची बात यह थी कि उन वन के देवता को ब्राह्मण पर दया आ गयी थी। वहीं शेर बनकर आया था। उसने ब्राह्मण को पाँच अशर्फियाँ दी। ब्राह्मण घर लौट आया। सबेरे जब ब्राह्मण अशर्फी लेकर वहाँ के बनिया से आटा-दाल खरीदने गया तब बनिये ने पूछा कि अशर्फी कहाँ मिली? ब्राह्मण ने सच्ची बात बता दी और वह आटा-चावल आदि लेकर घर आया।

बनिया बड़ा लोभी था। वह रात को अशर्फियों के लोभ में गया। उसने भी लोभ से भगवान का नाम लिया और प्रार्थना की। शेर आया। बनियो ने कहा- 'तुम झटपट मुझे खाकर पेट भर लो।'

शेर ने कहा - 'मैं तेरे जैसे लोभी को अवश्य खा जाता। पर किसी बहाने भगवान् का नाम तो तूने लिया ही है, अतः तुझे मारूँगा नहीं, केवल थोडा-सा दण्ड दूँगा।'

शेर ने बनिये को एक पंजा मारा। उसका एक कान चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ गया एक आँख फूट गयीं। उसे लोभ का यही पुरस्कार मिला।

जिकरा - 8

अब्राहम लिंकन का अपने पुत्र के प्रधानाचार्य के नाम पत्र

ऐ दुनिया, आज मेरे बेटे का स्कूल में पहला दिन है।

World, My Son starts School today!

ऐ दुनिया, मेरे बच्चे का हाथ थाम लो आज इसका स्कूल में पहला दिन है। कुछ देर को इसके लिए हर चीज नई और अजनबी होगी। इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इसके साथ नरमी से पेश आयें। आप तो जानते ही है कि इसका संसार अब तक घर तक ही सीमित था। इसने अपने चार दीवारी के बाहर कभी झाँका नहीं था यह अब तक घर का राजा रहा है। अब तक इसकी चोट पर मरहम लगाने और इसकी ठेस लगी भावनाओं को प्यार की लेप लगाने के लिए मैं हमेशा मौजूद था।

लेकिन अब बात दूसरी होगी। आज सुबह यह सीढ़ियों से उतरकर अपना नन्हा हाथ उत्साह के साथ हिलायेगा और अपनी बड़ी साहसिक यात्रा शुरू करेगा। जिसमें शायद संघर्ष भी हो दुःख भी होगा और निराशा भी होगी।

मैं जानता हूँ कि इसे एक दिन यह समझना पड़ेगा कि सभी लोग अच्छे नहीं होते सभी स्त्री पुरुष सच्चे नहीं होते इसे यह भी सिखाए कि संसार में हर घूर्ण के लिए एक अच्छा इंसान भी है। जहाँ एक दुश्मन है तो वहाँ एक दोस्त भी है। इसे किताबों की खूबियों के बारे में बताएँ और पढ़ने के लिए प्रेरित करें। कुदरत के छिपे सौन्दर्य जैसे-आसमान में उड़ते पंछी, गुनगुन करते भौंरे और हरी-भरी वादियों में खिले फूलों को कबरी से देखने और जानने के लिए पूरा समय दे। इसे यह भी सिखाएँ कि बेईमानी की जीत से हार जाना कहीं अच्छा है। इसे तब भी अपने विचारों पर विश्वास रखना सिखाएँ जब सब कह रहे हो कि वह गलत है।

इसे यह तो सिखाएँ कि वह दूसरों की बाते सुने, लेकिन हर बात सुने, लेकिन हर बात सच्चाई के तराजू पर परखे और उनमें से सिर्फ अच्छो को ही अपनाए।

अपनी अंतरात्मा की आबाध को सोने चाँदी के सिक्कों से न तौले। इसे यह सिखाए कि वह लोगों के कहने में न आए और अगर वह अपनी सोच में खुद को सही पाता है तो अपने सही इरादों पर डटा रहे और संघर्ष करें। इसे नरमी से सिखाए लेकिन ऐ दुनिया इसे बिगाड़े मत और कमजोर न बनाए क्योंकि लोहा आग में तपकर ही फौलाद बनता है।

वैसे तो ऐसा कर पाना एक बहुत बड़ी बात है मगर ऐ दुनिया, फिर भी आप ऐसा करने की कोशिश जरूर करे। आखिरकार वह एक बहुत प्यारा बेटा है।

प्रेरणा पूज्य बाबू जी

स्वाधीनता की आत्मा इस धरती पर डोल रही है
हमारे बाबूजी की वाणी से बोल रही है।

गृह त्यागी, अनुरागी, जन का निस्पृह योगी
चिर अनंत बाबूजी का संयम से सुख भोगी।
गाँव जगाता नगर जगाता घूम रहा है,

ठीक कर रहा है कलुषित मानस के रोगी
नाम रूप की सत्ता दुनिया तौल रही है
स्वाधीनता की आत्मा की धरती पर डोल रही है
हमारे बाबूजी की वाणी से बोल रही है।

इस संकट के हिमगिरि का संन्यासी,
लोक भूमि पर उतर पड़ा है चिर विश्वासी।
माँग रहा है धरती धन जो यही रहेगा,
परोपकारी नर ही है, अमृत अविनाशी।

भूखे नंगों की आशा अनमोल यही है
स्वाधीनता की आत्मा इस धरती पर डोल रही है
हमारे बाबूजी की वाणी से बोल रही है।

शिक्षा का महत्व

शिक्षा है जगत में प्यारा
इससे होता विकास हमारा।
सबको शिक्षित करना
है इसका उद्देश्य,
शिक्षा को स्थापित करना
न ईर्ष्या न द्वेष।
बहुत सहाय होती शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा
कह अक्षर का ज्ञान, कराती
अधिकारों का ज्ञान
शिक्षा से ही मिल सकता है,
सर्वपूर्ण सम्मान।
शिक्षा से ही बन सकता है
भारत देश महान।
शिक्षा है जीवन का आधार
इससे होते स्वप्न साकार।

नागरिक के कर्त्तव्य

नागरिक वह है जो किसी नगर अथवा राष्ट्र में रहता है तथा जिसे उस राष्ट्र के सम्पूर्ण राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार प्राप्त हो। नागरिक राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। उसे राष्ट्र की ओर से सुख, शान्ति तथा सुव्यवस्था के लिए अनेक अधिकार प्राप्त होते हैं। उन अधिकारों का सही प्रयोग को ही नागरिक का कर्तव्य कहते हैं। प्रत्येक नागरिक को अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों का भी पालन करना चाहिए अन्यथा वह अपने अधिकारों का उचित लाभ नहीं प्राप्त कर सकेगा। ईर्ष्या और वैमनस्य से अलग होकर, उसे उसके साथ प्रेम व सदभावना का व्यवहार करना चाहिये। सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में भी उसे सबके साथ भाई-चारे का भाव रखना चाहिए। जहाँ एक ओर प्रत्येक नागरिक की कर्तव्यों का पालन करना आवश्यक है वहीं दूसरी ओर उसे उसके न्यायोचित अधिकार भी मिलने चाहिए। अधिकारों तथा कर्तव्यों का चोली-दामन का साथ होता है।

टैक्स फ्री गुदगुदी

1. शिक्षक (गोलू से) : - तुम गणित में फेल हो गए हो।
   मोनू (शिक्षक से) : - मैं क्या करता, आपने ही गलत पढ़ाया।
   कभी 4 और 4 आठ बताया, कभी 6 और 2 आठ बताया और कभी 5 और 3 आठ बताया।
2. थप्पड़ मारने के बाद नाराज हुई पत्नी को मनाते हुए पति ने कहा, 'देखो, तुम गुस्सा मत हो। आदमी उसी को मारता है जिससे प्यार करता है।' इतना सुनते ही पत्नी ने पति को थप्पड़ लगाते हुए कहा, 'तो कया आपको लगता है कि मैं आपको प्यार नहीं करती।'
3. एक भिखारी दूसरे से : - अगर तुम्हें एक करोड़ रूपये मिल जाएँ तो तुम क्या करोगे?
   दूसरा भिखारी - फिर तो मैं कार में भीख मागूँगा।
4. राहुल - यार ! मैथ हमेशा इतनी क्यों कठिन होती है?
   श्याम - क्योंकि इसमें बहुत सी प्राब्लम्स होती हैं।
5 एक महिला को जुड़वाँ बच्चे हुए। इस पर नर्स ने उन्हें बधाई दी, लेकिन महिला कुछ उदास सी हो गई। इस पर नर्स ने पूछा, क्या आप खुश नही है? महिला बोली, मैं तो यह सोच रहीं हूँ कि अपने पति को दूसरे के बच्चे के बारे में क्या बताऊँगी।

सूर्या जैन

❖❖❖

Water

Every day we waste a lot of water and food water, in particular, is a renewable resource but it's alos limited. We can find, purify and package it, but we can't produce it. No life is possible with out water. Saving water means protecting life on earth and gives us the chance to provide food and water for people who don't have enough.

Good Food habits

Yesterday I went to the library to read a book about good food habits.

I learnt alot from this nice book.

These habits help us to stay healthy. We should wash our hands before and after eating.

We should eat clean and healthy food. We should eat fruits and vegetables daily. We should drink lots of clean water daily. We shoudl avoid eating too much oily food, chip, and chocolate.

BANANA

This is a fruit named banana. There are different varieties of banana in the world. This fruit is usuall yellow in colour.

But Raw banana is green, people use Raw banana in cooking. Banana leaves are also used in cooking and serving.

"Mango"

This is a Mango. It is a tasty. Pulpy and healthy fruit. It colour of the mango is yellow. It is generall known as the king of fruits. Mango is the national fruit of India. Mangoes are rich in vitamins and minerals.

It can be eaten as raw fruit, juice or salad.

STRAWBERRY

This is strawberry. It is a small fruit that grows on a small plant.

Strawberries are bright red in colour and in conical shape. Its taste is a mix of sweet and sour. It is a good source of 'vitamin C'. It is used to make jam, ice-cream, cake and jelly.

मेरा स्कूल

आओ बच्चों तुम्हें पढ़ाये,
इलाहाबाद प्राइमरी की गोद में।
हीरा मोती पैदा करता,
यह विद्यालय धूल में।

बालकगण तारों से चमके,
शिक्षा के आकाश में।
शिक्षा सबसे श्रेष्ठ यहाँ की,
इलाहाबाद के इतिहास में।
सभी छात्र-छात्राएँ मिलकर,
रक्षा करते-विद्यालय के मान की।
कण-कण में व्यापक वाणी,
सामवेद के मान की।
बालक-बालिका कोमल अंकुर से,
ज्ञान रश्मि पा जाते हैं।
योग्य शिक्षक शिक्षिका माली बनकर
यह उद्यान सजाते हैं।

विचित्र किन्तु सत्य

(1) भालू ऐसा जानवर है, जो घायल होन पर मनुष्य की तरह रोता है।
(2) मक्खी की आँख में 4000 छोट-छोटे लेंस होते हैं।
(3) दुनिया की सबसे पहली सुबह न्यूजीलैण्ड में होती है।
(4) मच्छर के 22 दाँत होते हैं।
(5) स्पेन में कपड़े का अखबार मिलता है।,
(6) रेशम के कीड़ों के ग्यारह मस्तिष्क होते हैं।
(7) चीन की दीवार को हम अन्तरिक्ष से भी देख सकते हैं।

अनिका राजपूत

श्रेष्ठ कौन

कौशल नरेश मल्लिक न्यायप्रिय और शक्तिशाली राजा था। लेकिन उसे अपनी योग्यता पर बिल्कुल भी भरोसा नही था। वह सोचता, 'लोग उसे अच्छा कहते हैं, क्यो मैं सचमुच ही अच्छा हूँ?'

एक दिन दरबार में उसने अपने मन्त्रियों से पूछा- 'मुझे सच बताना, कया मुझमें कोई दोष है?'

'नहीं महाराज।' मन्त्रियों के साथ दरबारी भी एक स्वर से कह उठे।

'आप सज्जन, दयालु और न्यायप्रिय है।' एक मन्त्री ने कहा। राजा ने अपनी प्रजा से भी पूछा लेकिन सबका यही उत्तर था कि आप कुशल शासक है। हम सब आपके आंगन में सुखी और सम्पन्न हैं।

लेकिन राजा मल्लिक फिर भी संतुष्ट नहीं हुआ। वह सोचने लगा, 'शायद मेरे मन्त्री प्रजाजन सच नहीं बोल रहे।'

वह भेष बदलकर गाँव-गाँव घूमा। लेकिन उसे एक भी निंदक नहीं मिला। ग्रामीणों की भी यही राय थी कि हमारे राजा मल्लिक जैसा चरित्रवान और दयालु कोई और नहीं है।'

एक दिन राजा का रथ एक सँकरा पुल पार कर रहा था। वह पुल मात्र इतना चौड़ा था कि उसमें एक ही रथ जा सकता था। यदि सामने से कोई अन्य वाहन आ जाए तो मार्ग अवरूद्ध हो जाता था।

अब इसे संयोग ही कहा जायेगा कि सामने से राजा ब्रह्मदत्त भी अपने शाही रथ पर आ रहे थे! दोनों के रथ आमने-सामने रूक गए।

राजा मल्लिक के सारथी ने कहा, 'अपना रथ पीछे हटाओ, वे राजा मल्लिक है'

दूसरी तरफ से राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने कहा, 'जो दोनों में श्रेष्ठ होंगे, वही पहले पुल पार करेंगे।'

राजा मल्लिक का सारथी बोला, 'तुम्हारे महाराज की आयु क्या और उनका राज्य कितना बड़ा है?'

इस तर से उन दोनों में बहस होने लगी। दोनों राजाओं की आयु और राज्य तकरीबन बराबर-बराबर ही निकले। इसका फैसला न हो पाया तो राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने कहा, 'तुम्हारे स्वामी में क्या विशेषता है?'

राजा मल्लिक के सारथी ने कहा, 'मेरे स्वामी बुराई का बदला बुराई से तथा भलाई का बदला भलाई से देते है।'

'यदि ये तुम्हारे स्वामी की विशेषता है तो दोनों की कल्पना से ही मैं सिहर उठता हूँ।' राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने कहा।

'आखिरकार कोई तो ऐसा मिला जिसने साफ बात कही है।' राजा मल्लिक सोच में पड़ गया।

'अब बकवास बन्द करो और यह बताओं तुम्हारे स्वामी में क्या विशेषता है?'राजा मल्लिक भी उतावला-सा राजा ब्रह्मदत्त के सारथी की ओर देखने लगा।

'मेरे स्वामी बुराई का बदला भी भलाई से देते हैं।' राजा ब्रह्मदत्त के सारथी ने कहा। इतना सुनते ही राजा मल्लिक खड़ा हो गया और बोला, 'तब निश्चय ही वे मुझसे श्रेष्ठ शासक है।' इतना कह कर वह नीचे उतर गया और राजा ब्रह्मदत्त को प्रणाम किया।

फिर वह अपने सारथी के पास आया और बोला, 'अब मुझे ज्ञात हुआ, मुझमें कितना दोष है। मैं आदर्श से अभी कितना दूर हूँ। चलो, अपना रथ पीछे कर लो और राजा ब्रह्मदत्त को पहले रास्ता दो।'

शिक्षा - गुण-दोषो की परख अपने लोग नही, दूसरे ही कर सकते है।

पहेलियाँ

(1) बीसो का सिर काट लिया,
ना मारा न खून किया।

(2) एक कहानी मैं कहुँ सुन ले मेरे पूत,
बिना पैरों के वह उड़ गया बाँधे गले में सूत।

(3) इसके ऊपर ताल-बनाओं, इसके ऊपर नहरें,
इसके ऊपर नदियाँ बहती जिनमें उठती लहरें।
कोई इसमें बाग लगाता, कोई करता खेती,
यह सबको देती है, सबसे क्या लेती।

उत्तर - (1) नाखून, (2) पतंग (3) पृथ्वी

अंश अग्रवाल - 5

❖❖❖

व्यवहार

किसी ने बोली- नम्रता से बोलो।
किसी से बोलो-सत्य बोलो।
किसी से बोलों-सभ्यता से बोलो।

किसी से मिलो, प्रेम से बोलो।
किसी से मिलों, प्रेम से मिलो।
किसी से मिलो, आदर से मिलो।

किसी से कुछ लेना हो, सरलता से माँगो।
किसी से कुछ लेना हो, सच्चाई से माँगो।
किसी से कुछ लेना हो, सिधाई से माँगों।
किसी को कुछ देना हो, समय पर दो।
किसी को कुछ देना हो, उदारता से दो।
किसी को कुछ देना हो, ईमानदारी से दो।

व्यवहार में सरलता रखो।
व्यवहार में सच्चाई रखो।
व्यवहार में ईमानदारी रखो।
व्यवहार में उदारता रखो।

सच्चे बनो। सच्चा व्यवहार करो।
सरल बनो। सरलता का व्यवहार करो।
उदार बनो। उदारता का व्यवहार करो।
दयालु बनो। दयापूर्ण व्यवहार करो।
ईमानदार बनो। ईमानदारी का व्यवहार करो।

कालेज की डायरी से

स्वतन्त्रता दिवस-

स्वतन्त्रता दिवस प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी मनाया गया। प्रातः 8 बजे 15 अगस्त को सभी छात्र-छात्राएँ स्कूल ड्रेस में कालेज प्रांगण में उपस्थित हुए। इस पुनीत पर्व पर प्रार्थना एवं राष्ट्रीय गाने के पश्चात् बच्चे अपनी कक्षाओं में गये, जहाँ अध्यापकों एवं बच्चों की स्वतन्त्रता -दिवस पर गोष्ठियाँ हुईं। अन्त में मिष्ठान वितरण के पश्चात् एक सुखद् याद के साथ इसका समापन हुआ।

गाँधी जयन्ती -

2अक्टूबर का राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी की जयन्ती के अवसर पर कल-प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें कक्षावार विजेता- प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया व मिष्ठान वितरण किया गया।

गणतन्त्र दिवस-

सम्पूर्ण आजादी प्राप्त संविधान के गठन के इस पुनीत पावन पर्व पर प्रार्थना स्थल पर बच्चों द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किये गये। उसके बाद कक्षाओं में अध्यापकों ने इस दिवस की महत्ता पर उपयोगी बातें बतायी। प्रत्येक कक्षाओं के बच्चों ने फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार वितरित किया गया। समापन के बाद मिष्ठान और नमकीन वितरण किया गया।

बाल दिवस -

बाल दिवस को हमारे प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरू जी की जयन्ती के अवसर पर नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रत्येक कक्षा के बच्चों ने भाग लिया। प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त बच्चों को पुरस्कार वितरित किया गया। अन्त में बच्चों को टॉफी व केक बांटा गया।

परीक्षा फल-

लगभग 995 प्रतिशत रहा। परीक्षा फल के साथ हर बच्चे को वार्षिक पत्रिका दी गयी।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता-

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सम्पन्न हुई। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। तीन टांग की दौड़, रस्सी कूद, मेढक की दौड़ व कुर्सी दौड़ तथा अमरूद की दौड़ खेल के मुख्य आकर्षण रहे।

निर्धन एवं प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहित करना

जातिय-शिक्षा परिषद ने पितृ-विहीन, निर्धन एवं प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को छात्र-वृत्ति देकर शिक्षा क्षेत्र में प्रगति की राह प्रशक्त की।

वार्षिकोत्सव - वार्षिक पुरस्कार वितरण एवं रंगारंग कार्यक्रम -

सभी छात्र-छात्राओं जिन्होंने क्रीड़ा-प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया है, विगत वर्ष की परीक्षा में वरीयता क्रम मे प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया गया तथा रंगारंग कार्यक्रमों के कलाकारों ने पुरस्कार अर्जित करने का गौरव प्राप्त किया।

विदाई समारोह -

कक्षा 8 के छात्रों का विद्यालय में अन्तिम वर्ष होने के कारण विदाई दी गयी। कक्षा 6,7 के बच्चों ने 8 के बच्चों को सम्मान के लिए रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बच्चों को नाश्ता करवाकर, टीका लगाकर दही पेड़ा भी खिलाया गया व उपहार दिया गया।

वार्षिकोत्सव - वार्षिक पुरस्कार वितरण एवं रंगारंग कार्यक्रम

मुख्य अतिथि माननीय श्री न्यायमूर्ति सूर्य प्रकाश केसरवानी जी एवम् माननीय न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल जी इलाहाबाद के कर कमलों सभी छात्र-छात्राओं जिन्होंने क्रीड़ा प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया है, विगत वर्ष की परीक्षा में वरीयता क्रम में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा रंगारंग क्रार्यक्रम के कलाकारों में पुरस्कार अर्जित करने का गौरव प्राप्त किया। अध्यक्ष श्री डॉ0 श्री पीयूष रंजन अग्रवाल ने मुख्य अतिथि तथा अन्य सभी गणमान्य जनों का अभिवादन किया। प्रबन्धक श्री राजेश अग्रवाल जी ने अभिनन्दन के साथ अन्य विषयों पर अपने मत एवं विचार व्यक्त किये। कला एवं संगीतमय सुरभि के मध्य कार्यक्रम का समापन हुआ।

❖❖❖

इलाहाबाद विद्या निकेतन

सत्र - 2024

1.	श्रीमती ट्विंकल अग्रवाल	- प्रधानाध्यापिका
2.	श्रीमती माला सेठ	- सहायक अध्यापिका
3.	श्रीमती दीप्ती गोयल	- सहायक अध्यापिका
4.	श्रीमती अंजुला अग्रवाल	- सहायक अध्यापिका
5.	श्रीमती प्रियंका अग्रवाल	- सहायक अध्यापिका

सन 2023 24 की वार्षिक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कार्यक्रम

गणतंत्र दिवस के अवसर पर कला प्रतियोगिता